Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم نحمدہ ونصلی علی رسولہ الکریم وعلی عبدہ المسیح الموعود

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 39
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

02 रबीउल् सानी, 1446-47 हिज्री कमरी, 25 तबूक 1404 हिज्री शम्सी, 25 सितंबर 2025 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(सूरः अन्फ़ाल आयत: 28)

अनुवाद : हे ईमान लाने वालो! तुम अल्लाह और उसके रसूल से विश्वासघात न करो, अन्यथा उसके परिणामस्वरूप तुम स्वयं अपनी अमानतों में भी विश्वासघात करने लगोगे, जबकि तुम इस विश्वासघात को जानते हो।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

अधीनस्थों के साथ अच्छा व्यवहार

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह ने अता के माध्यम से यह वृत्तांत वर्णित किया है कि अता ने अनेक साथियों से यह घटना सुनी थी कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा की एक दासी थी जो उनकी बकरियाँ चराया करती थी। अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने उसे एक बकरी का विशेष ध्यान रखने की आज्ञा दी। फलस्वरूप वह बकरी बहुत मोटी और स्वस्थ हो गई। एक दिन जब दासी अन्य पशुओं की देखभाल में व्यस्त थी, तभी एक भेड़िया आकर उस बकरी को फाड़ खा गया। जब अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने उस बकरी को अनुपस्थित पाया तो उसके विषय में पूछा। दासी ने सम्पूर्ण घटना बता दी जिस पर उन्होंने दासी को एक थप्पड़ मार दिया। बाद में वे अपने इस आचरण पर लज्जित हुए और इस घटना का उल्लेख आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से किया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस विषय को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना और कहा: क्या तुमने एक आस्थावान स्त्री के मुख पर प्रहार किया? इस पर अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने निवेदन किया आँहज़रत! वह तो हब्शा प्रदेश की रहने वाली है और अज्ञानी स्त्री है, उसे धर्म का ज्ञान नहीं। तब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उस दासी को बुलवाया और उससे पूछा अल्लाह कहाँ है? उसने कहा: आकाश में। फिर आपने पूछा: मैं कौन हूँ? उसने उत्तर दिया अल्लाह के नबी। यह सुनकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा यह आस्थावान स्त्री है, इसे मुक्त कर दो। तब अब्दुल्लाह बिन रवाहा ने उसे स्वतंत्र कर दिया। (मुसनद इमाम-ए-आज़म श्रद्धा और धर्म) (सदाचारी उद्यान, हदीस संख्या 179, रचयिता : श्री मलिक सैफ़ुर्रहमान)

★ ★ ★

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद तेजस्वी रूप में था और अहमद सौम्य रूप में। चूँकि हमारा सिलसिला भी सौम्य स्वरूप में है, इस कारण इसका नाम अहमदी रखा गया।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

अहमदी समुदाय का नामकरण

(इस समुदाय का नाम "अहमदी" रखे जाने पर किसी ने कहा कि यह नया नाम है। इस पर कुछ वार्ता हुई।)

फ़रमाया : ''लोगों ने जो अपने नाम हनफ़ी, शाफ़ेई आदि रखे हैं, ये सब नवाचार हैं। हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के केवल दो ही नाम थे मुहम्मद और अहमद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का महान नाम मुहम्मद है, जैसे कि अल्लाह का महान नाम "अल्लाह" है। "अल्लाह" अन्य सभी नामों जैसे जीवनदाता, धारणकर्ता, दयामय, कृपालु आदि का मूल विशेषण है। हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम अहमद वह है जिसका उल्लेख हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने किया

يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ (सूरह अस-साफ़ : 7)

"मेरे पश्चात् वह आएगा जिसका नाम अहमद होगा।"

यहाँ मेरे पश्चात् का शब्द यह स्पष्ट करता है कि वह नबी मेरे पश्चात् तुरंत आएगा, अर्थात् मेरे और उसके बीच कोई अन्य नबी न होगा। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने ये शब्द नहीं कहे, बल्कि उन्होंने इस प्रकार संकेत किया :

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ ... (सूरह अल-फ़त्ह : 30)

इसमें हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मदनी जीवन की ओर संकेत है, जब बहुत से विश्वासी उनके साथ थे जिन्होंने अविश्वासियों से युद्ध किया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद बताया क्योंकि हज़रत मूसा स्वयं भी तेजस्वी स्वरूप में थे। और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का नाम अहमद बताया क्योंकि वे स्वयं भी सदैव सौम्य स्वरूप में रहे। अब चूँकि हमारा सिलसिला भी सौम्य स्वरूप में है, इस कारण इसका नाम अहमदी रखा गया।

(मल्फ़ूज़ात, खंड 2, पृष्ठ 88, संस्करण 2018, क़ादियान)

आध्यात्मिकता के पाँचवें स्तर पर पहुँचकर मनुष्य फ़रिश्ते बन जाता है। ऐसा मनुष्य अल्लाह के सब आदेशों को पूर्ण करता है और उस पर कभी भी असावधानी की नींद नहीं आती।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, सूरः अल-मौमिनून, आयत 18

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ

की व्याख्या करते हुए सात आध्यात्मिक स्तरों में से चौथे के विषय में फ़रमाते हैं :

चौथा स्तर मनुष्य को तब प्राप्त होता है जब उसमें धार्मिकता और आध्यात्मिकता का आकर्षण उत्पन्न हो जाता है और वह सब कार्य विवेक और समझ से करने लगता है। किन्तु कभी-कभी उस पर शैतान भी प्रभाव डाल देता है। हाँ, पाप का आक्रमण उस पर बहुत कम प्रभावी होता है क्योंकि उसमें बुराई को बुराई समझने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है। इस स्थिति की ओर अल्लाह ने इन शब्दों में संकेत किया है :

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّيْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ

(सूरह अल-आ'राफ़, रुकू 24)

अर्थात् वे लोग जिन्होंने धर्मपरायणता को अपनाया, जब शैतान की ओर से आने वाला कोई विचार उन्हें छूता है तो वे सजग हो जाते हैं और उनकी आँखें खुल जाती हैं और वे मार्ग पा जाते हैं। इस आयत से प्रकट है कि कभी-कभी ऐसे लोगों को शैतान अपनी ओर खींचता है, किन्तु वे तत्काल सचेत हो जाते हैं और अल्लाह को अपनी सहायता के लिए पुकारते हैं और शैतानी आक्रमण से सुरक्षित हो जाते हैं।

फिर मनुष्य इससे भी आगे बढ़ता है और पाँचवें स्तर में पहुँचकर फ़रिश्ते के समान हो जाता है। अर्थात् उसकी अल्लाह-ज्ञान में ऐसी प्रगति हो जाती है कि अल्लाह के सभी आदेशों का पालन उसकी आहार-शक्ति बन जाता है और जिस प्रकार फ़रिश्ते يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ (जो उन्हें आदेश दिया जाता है, वे वही करते हैं) के प्रत्यक्ष प्रमाण होते हैं, उसी प्रकार ऐसा मनुष्य भी अल्लाह के सब आदेशों का पालन करता है और उस पर कभी असावधानी की नींद नहीं आती।

ऐसे ही लोगों के विषय में अल्लाह क़ुरआन करीम में कहता है :

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ (सूरह अर-रअद, रुकू 3)

अर्थात् ऐसे लोगों के पास हर मार्ग से फ़रिश्ते आएँगे और उनसे कहेंगे कि तुम्हारे लिए शांति ही शांति है क्योंकि तुम अल्लाह की राह में धैर्यवान बने रहे। तो अब देखो कि तुम्हारे लिए इस घर का कितना ही अच्छा परिणाम है।

चूँकि ये लोग दैवीय गुणों वाले होंगे, इस कारण उन्हें देखते ही फ़रिश्ते उनकी ओर दौड़ पड़ेंगे और उन्हें अल्लाह के निकटता और उसके अनुग्रहों की प्राप्ति का शुभ समाचार देंगे। किन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि इस आयत का यह अर्थ नहीं कि फ़रिश्ते अपनी अधिकता के कारण एक ही द्वार के स्थान पर बहुत से द्वारों से प्रवेश करेंगे, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि प्रत्येक द्वार का फ़रिश्ते उनके पास आएगा और उन्हें बधाई देगा कि तुम उस संघर्ष में सफल हो गए जिसमें मैं और तुम मिलकर शैतान का सामना करते थे। क्योंकि पाप मनुष्य के हृदय में कई मार्गों से प्रवेश करता है कभी नेत्रों के द्वारा, कभी कानों के द्वारा और कभी स्पर्श तथा रसना के द्वारा। और चूँकि प्रत्येक मार्ग की रक्षा के लिए अल्लाह ने फ़रिश्ते नियुक्त किए हैं, इसलिए जब मनुष्य शैतान पर विजय प्राप्त कर लेता है तो प्रत्येक द्वार का फ़रिश्ते उसे बधाई देने के लिए आता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, खंड 6, पृष्ठ 146–147, मुद्रित क़ादियान, 2010)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च नैतिक चरित्र की झलक इस बात पर गौर करने योग्य है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का फतह कर लिया था। अब यह एक पराजित कौम थी और युद्ध के नियमों और रिवाजों के अनुसार विजेता ही पराजित कौम की संपत्ति का मालिक हुआ करता था। लेकिन अब जब युद्ध के लिए हथियारों की आवश्यकता पड़ी तो एक-एक हथियार उधार लिया गया और इस वादे के साथ कि हम जितने हथियार ले रहे हैं, उतने ही वापस करेंगे।

ग़ज़वा-ए-हुनैन के परिप्रेक्ष्य में सीरत-ए-नबवी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का रूहानी वर्णन श्रीमान ख़्वाजा मुख़्तार अहमद साहिब बट (कनाडा) और श्रीमाना सईदा बेगम साहिबा (पत्नी नज़ीर अहमद साहिब, भारत) का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज-ए-जनाजा गायब (अनुपस्थिति में)

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 अगस्त 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

युद्धों या ग़ज़वात के संदर्भ में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के हवाले से चर्चा हो रही थी। इसी क्रम में आज ग़ज़वा-ए-हुनैन का भी वर्णन करूंगा। यह ग़ज़वा शव्वाल 8 हिजरी में घटित हुआ। इसे ग़ज़वा-ए-हुनैन क्यों कहा जाता है? क्योंकि हुनैन मक्का और ताइफ के बीच एक कस्बे का नाम है जो मक्का से लगभग 26 किलोमीटर की दूरी पर है। यह ग़ज़वा इसी जगह पर हुआ था, इसलिए इसे ग़ज़वा-ए-हुनैन कहा जाता है। इस ग़ज़वे में शामिल बड़ा कबीला हवाज़िन था, इसलिए इसे ग़ज़वा-ए-हवाज़िन भी कहा जाता है। कुछ ने इसे ग़ज़वा-ए-अवतास भी कहा है क्योंकि दुश्मन की सेना का एक हिस्सा हुनैन से भाग कर अवतास नाम की वादी में चला गया था और मुसलमानों ने वहाँ पहुँच कर दुश्मन को हराया था। इसलिए कुछ ने यह नाम दिया है, जबकि अधिकांश लेखकों ने सरिय्य-ए-अवतास का अलग से ज़िक्र किया है।

(अस-सीरतुल हलबिया, भाग 3, पृष्ठ 151, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (ग़ज़वातुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अल्लामा बुरहानुद्दीन हलबी, अनुवादक उर्दू, पृष्ठ 623) (दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग 9, पृष्ठ 221, बज़्म-ए-इकबाल लाहौर) (तबकातुल कुबरा, भाग दुज, पृष्ठ 114, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

ग़ज़वा-ए-हुनैन का ज़िक्र कुरआन करीम में इस तरह है:

أَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ. ثُمَّ أَنْزَلَ اللهُ سَكِيْنَتَهُ عَلٰى رَسُوْلِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَأَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ. ثُمَّ يَتُوْبُ اللهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ. (सूरत अत-तौबा: 25-27)

"निश्चय ही अल्लाह ने तुम्हारी बहुत-सी जगहों पर सहायता की है और विशेष रूप से हुनैन के दिन भी, जब तुम्हारी बड़ी संख्या ने तुम्हें घमंड में डाल दिया था। फिर वह तुम्हारे किसी काम न आ सकी और ज़मीन चौड़ी होने के बावजूद तुम पर सिकुड़ गई, फिर तुम पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए। फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर अपनी सुकूनत (शांति) नाज़िल की और ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुम देख नहीं सकते थे और उसने उन लोगों को यातना दी जिन्होंने इन्कार किया था और इन्कार करने वालों की ऐसी ही सज़ा होती है। फिर उसके बाद भी अल्लाह जिस पर चाहता है, तौबा कबूल करते हुए झुक जाता है और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला, दयावान है।"

इसकी वजह यह हुई कि जब मक्का फतह हो गया और उस समय तक अरब के बड़े-बड़े कबीलों ने या तो इस्लाम कबूल कर लिया था या हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारिता में आ गए थे। लेकिन मक्का के नज़दीक बसने वाले बनू हवाज़िन और बनू सक़ीफ़, जो बहुत ही उद्दंड और योद्धा कबीले थे, उन्होंने न केवल आज्ञा मानने से इनकार किया, बल्कि उनके सरदार इकट्ठे हुए और कहने लगे कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने मक्का समेत अरब के कबीलों को अपना आज्ञाकारी बना लिया है। अब वे निश्चित रूप से हमारी तरफ बढ़ेंगे। इसलिए बेहतर होगा कि इससे पहले कि वे हमारी तरफ बढ़ें, हम खुद उन पर हमला कर दें। उन्होंने खुद ही अनुमान लगा लिया और यह भी कहने लगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अब तक अनाड़ी लोगों से सामना हुआ है, हमारे साथ अब तक उनका सामना नहीं हुआ है। बनू हवाज़िन के साथ कबीला सक़ीफ़, नस्र और जशम के सभी योद्धा इकट्ठे हो गए। कबीला सअद बिन बक्र और बनू हिलाल में से कुछ लोग इकट्ठे हुए।

(उद्धारित सब्लुल हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 310, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

कुछ रिवायतों से पता चलता है कि बनू हवाज़िन ने वास्तव में इससे बहुत पहले ही मुसलमानों का मुकाबला करने की तैयारी शुरू कर दी थी, क्योंकि जब उन्होंने देखा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम धीरे-धीरे यहूदियों समेत दूसरे कबीलों को अपने अधीन करते जा रहे हैं, तो उन्हें चिंता हुई कि कहीं ऐसा न हो कि मूर्तिपूजा खत्म हो जाए और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने साथियों समेत सब पर प्रभुत्व स्थापित कर लें। इसलिए ज़रूरी है कि उनका रास्ता रोका जाए। चूंकि इसके लिए उन्होंने तैयारी शुरू कर दी और उरवा बिन मसऊद की कमान में एक दल जॉर्डन के शहर जुरश की तरफ भेजा ताकि वहाँ से हथियार और युद्ध का सामान आदि लेकर आएं। बनू हवाज़िन की इन तैयारियों की खबर इस तरह हुई कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फतह-ए-मक्का के लिए मदीना से मक्का की तरफ रवानगी का इरादा फरमाया, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हरावल दस्ते के तौर पर कुछ लोगों को लश्कर के आगे-आगे रवाना कर दिया। इस हरावल दस्ते ने हवाज़िन के एक आदमी को गिरफ्तार कर लिया, जो एक जासूस था और हवाज़िन की तरफ से मुसलमानों पर नज़र रखने के लिए घूम रहा था। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब उससे पूछा और अच्छी तरह पूछताछ की, तो उसने बताया कि बनू हवाज़िन ने बहुत सी फौज इकट्ठी की है और बनू सक़ीफ़ को भी अपने साथ शामिल कर लिया है और भारी हथियारों और शस्त्रों के लिए जुरश की तरफ दल भेजा है।

(तारीख़-ए-तबरी, भाग 2, पृष्ठ 166-167, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (इम्ताउल असमा, भाग 1, पृष्ठ 356, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)(उद्धारित ग़ज़वा-ए-हुनैन, बाशमील, पृष्ठ 83-85, नफ़ीस एकेडमी कराची) (उद्धारित अल-लौलौउल मक्नून सीरत इनसाइक्लोपीडिया, भाग 9, पृष्ठ 240, दारुस्सलाम)

बनू हवाज़िन इन्हीं तैयारियों में थे कि मक्का बिना किसी खास मुकाबले के आसानी से फतह हो गया, जिसकी वजह से हवाज़िन ने अपनी ताकत के घमंड में यह फैसला किया कि हम खुद मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथियों से मुकाबले के लिए निकलें और जैसा कि उनका दावा था कि हम ही हैं जो मुसलमानों को परास्त करके उनका सफाया कर सकते हैं। इन सभी कबीलों ने कबीला हवाज़िन के सरदार तीस साल के जवान मालिक बिन औफ को अपना सेनापति और सरदार बनाया और बीस हज़ार का लश्कर तैयार होकर हुनैन की तरफ बढ़ने लगा। बनू हवाज़िन के

सरदार मालिक बिन औफ ने इस युद्ध की तैयारी के लिए एक ऐसा कदम उठाया जो अरब के इतिहास में शायद ही पहले किसी ने उठाया हो और वह यह कि सेनापति ने हर कबीले के हर व्यक्ति को यह हुक्म दिया कि वह लड़ाई के लिए अपने घर से अकेले नहीं निकलेगा, बल्कि अपनी बीवी-बच्चे, यहाँ तक कि अपना माल-मवेशी सब कुछ साथ लेकर निकले। इसका उसका मकसद यह था कि उसके लश्कर का हर सिपाही जान तोड़कर मर्दाना वार लड़ेगा। उसके ज़हन में यह होगा कि उसके लिए भागने की कोई राह नहीं है क्योंकि उसके बीवी-बच्चे, माल-मवेशी सब उसके साथ ही हैं।

इस युद्ध में एक बूढ़े सरदार दुरैद बिन सिम्मा के लड़ाई से रोकने का ज़िक्र भी मिलता है। यह हवाज़िन के साथ था। लिखा है कि बनू जशम में एक शख्स दुरैद बिन सिम्मा था, जिसकी उम्र सौ साल से ज़्यादा थी। वह बूढ़ा शख्स था जिसकी आँखों की रोशनी खत्म हो चुकी थी। उसमें लड़ाई की ताकत नहीं थी, मगर अनुभवी था और युद्ध कौशल से अच्छी तरह वाकिफ था। किसी जमाने में बहादुरी और शहसवारी में उसकी शोहरत हुआ करती थी। उन्होंने उसे भी साथ ले लिया ताकि उसके अनुभव और महारत से फायदा उठा सकें। जब मालिक बिन औफ ने लोगों के साथ मिलकर

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ चलने पर अक़्द कर लिया और लोग अपने अमवाल, अपनी औरतों, अपने बेटों को लेकर निकले, यहाँ तक कि वे अवतास की वादी में पहुँच गए और वहाँ खेमा जमा लिया। बूढ़े दुरैद बिन सिम्मा ने नीचे उतर कर ज़मीन को अपने हाथ से छुआ और कहा: तुम किस वादी में हो? तो उन्होंने कहा: वादी-ए-अवतास में। उसने कहा: यह कठोरता के लिहाज से घोड़ों के चलने के लिए अच्छी जगह है। कोई हर्ज नहीं है। इतनी नर्म नहीं कि खुर धंस जाएँ, मगर यह बच्चों के रोने की आवाज़ें, ऊँटों, गधों, बकरियों और गायों की आवाज़ें क्यों सुन रहा हूँ? तो लोगों ने जवाब दिया कि मालिक बिन औफ के हुक्म पर सभी बच्चों, औरतों और माल-मवेशी को साथ लाया गया है। तो दुरैद ने मालिक से कहा: तू अपनी कौम का सरदार है, आज के दिन का असर बाकी दिनों पर है। यह बच्चों, ऊँटों, गधों, बकरियों और गायों को साथ क्यों लाया है? उसने जवाब दिया कि मैं चाहता हूँ कि मैं हर इंसान के पीछे उसके अहल-ओ-अयाल को खड़ा कर दूँ ताकि वह दुश्मन के साथ बेजिगरी से लड़े। दुरैद ने कहा: यह नहायत गलत राय है। अल्लाह की क़सम! तुम महज भेड़ों को चराना जानते हो। अर्थात उसने कहा: तुम्हें लड़ाई नहीं आती। तुम्हें लड़ाई का कुछ मालूम नहीं है। फिर कहा: क्या हारी हुई जमाअत को कोई चीज़ वापस मिल सकती है? सुनो, लड़ाई में तुम्हारे नफे के लिए सिर्फ यही बात है कि आदमी का नेज़ा और उसकी तलवार काम आएगी और अगर लड़ाई का फैसला तुम्हारे खिलाफ हुआ तो तुम अपनी बीवी-बच्चों और माल से हाथ धो बैठोगे। ऐ मालिक! तूने हवाज़िन की जमाअत और घोड़ों को आगे क्यों नहीं किया? अमवाल, औरतों और बच्चों को कौम के किलों में भेज दो। फिर घोड़ों पर सवार होकर उनसे लड़ो और पैदल फौज घोड़ों के बीच में होगी। अगर तुम्हें कामयाबी हुई तो यह लोग, बच्चे और माल-मवेशी तुमसे आ मिलेंगे और अगर तुम नाकाम रहे तो तुम उनके पास चले जाना। इस तरह तेरे अहल-ओ-अयाल और सारे मवेशी बच जाएँगे। मालिक बिन औफ ने कहा: अल्लाह की क़सम! मैं ऐसा नहीं करूंगा और न ही अपना फैसला बदलूंगा। तुम बूढ़े हो गए हो, तुम्हारी अक्ल मारी गई है। दुरैद ने कहा: ऐ हवाज़िन के गिरोह! अल्लाह की क़सम! यह राय सही नहीं है। यह शख्स तुम्हारी औरतों को बेइज्जत कर देगा और यह शख्स तुमको दुश्मन के हवाले करके खुद सक़ीफ़ के किलों में जाकर छिप जाएगा। इसलिए तुम वापस लौट जाओ और इसे छोड़ दो। इस तरह उसने युद्ध न करने की सलाह दी। इस पर मालिक ने, जिसे सरदार बनाया गया था, अपनी तलवार निकाली और कहा: ऐ हवाज़िन के गिरोह! अल्लाह की क़सम! तुम्हें मेरी आज्ञा माननी पड़ेगी, वरना मैं अपना सारा बोझ इस तलवार पर डालकर इसे अपने सीने से पार कर दूंगा, अर्थात आत्महत्या कर लूंगा। बनू हवाज़िन ने आपस में सलाह की और कहा: अल्लाह की क़सम! अगर हमने मालिक की नाफरमानी की तो वह खुद को मार देगा, हालांकि वह नौजवान है, उसकी उम्र तीस साल के करीब थी, तो फिर हम दुरैद के साथ बाकी रह जाएँगे और वह बूढ़ा है, उसके साथ मिलकर युद्ध नहीं किया जा सकता। तुम मालिक के साथ इत्तिफाक कर लो। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। मालिक ने दुरैद से पूछा कि क्या इसके अलावा कोई और भी राय है? तो दुरैद ने कहा कि हाँ, घात लगाने की जगहों (कमीनगाहों) में अपने आदमियों को छुपा दो जो तुम्हारे मददगार साबित हों। अगर दुश्मन ने तुम पर हमला कर दिया तो ये उनके पीछे से हमला कर देंगे। तुम अपने साथियों के साथ दोबारा हमला कर सकोगे। अगर तुमने हमला किया तो फिर उनमें से एक भी पीछे न हटेगा। इस पर मालिक ने अपने साथियों से कहा कि वे घाटियों और वादियों के दामनों में छिप जाएँ। पहला हमला ही एकबारगी से कर दें ताकि इस्लामी लश्कर को शिकस्त दे सकें।

(सीरत इब्ने हिशाम, पृष्ठ 761-762, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (अस-सीरतुल हलबिया, भाग 3, पृष्ठ 151-152, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)
(तारीख़ुल खमीस, भाग 2, पृष्ठ 508-509, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (सब्लुल हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 311-312, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)
(ग़ज़वा-ए-हुनैन, बाशमील, पृष्ठ 78, नफ़ीस एकेडमी कराची)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बनू हवाज़िन की तैयारीकी खबर भी मिली। पहले भी कुछ बयान हुई है। जिसकी तफ्सील यूँ है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का में इन वाकियात की खबर पहुँची, तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कबीलों हवाज़िन के लश्कर के हालात के जायज़े के लिए हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू हदरद असलमी को भेजा था। एक तो उस जासूस ने कुछ खबर दी थी कि हथियार इकट्ठे हो रहे हैं। अब जब यह तैयारी हो गई, तो फिर इसके लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना एक आदमी भेजा कि खबर लाओ, जो अब्दुल्लाह बिन अबू हदरद असलमी थे। वे उन हवाज़िन के लोगों के लश्कर में दाखिल हो गए और उनमें घुल-मिलकर हर तरह की जानकारी जमा की। वे एक या दो दिन उनमें ठहरे रहे, यहाँ तक कि उन्होंने मालिक को यह कहते हुए भी सुनाजो अपने साथियों का हौसला बढ़ाने के लिए यह कह रहा था कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) ने इससे पहले किसी ऐसी कौम से कत्ल नहीं किया है जो युद्ध कौशल से आशना हो। उन्होंने ऐसी कौम के जवानों से लड़ाई की है जिन्हें लड़ाई का इल्म नहीं है, तो वे उन पर गालिब आ गए हैं। इसलिए जब सुबह होगी तो तुम अपने मवेशियों और अपनी औरतों की सफ़ अपने पीछे बना लो, फिर एक ही बार हमला कर देना और तुम अपनी तलवारों की म्यान तोड़ देना और बिना म्यान बीस हज़ार तलवारों से लड़ो और एक मर्द के हमले की तरह हमला करो और तुम जान लो कि जीत वही पाएगा जो पहले हमला कर लेगा। फिर अब्दुल्लाह बिन अबू हदरद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारी खबर दी। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मजबूरन मुकाबले की तैयारियाँ कीं।

(शरहुल अल्लामा अज़-ज़रकानी, जुज़ 3, पृष्ठ 500-501, ग़ज़वा-ए-हुनैन, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)(सीरतुन नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, शिब्ली, भाग औल, पृष्ठ 355, दारुल इशाअत कराची)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बनू हवाज़िन से मुकाबले के लिए मक्का से रवानगी से पहले जायज़ा लिया, तो संभावित युद्ध के लिहाज से इस्लामी फौज के पास युद्ध सामग्री बहुत कम थी। इस कमी को पूरा करने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का के मालदार रईस सफ़वान बिन उमय्या, जो उस समय तक अभी मुशरिक ही था, से कुछ हथियार क़र्ज़ के तौर पर माँगे। तो उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा: क्या आप मेरा माल उधार लेना चाहते हैं या जबरदस्ती छीनना चाहते हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: नहीं, हम तो यह उधार माँग रहे हैं और इनकी वापसी के लिए ज़मानत है। इस पर वह देने के लिए तैयार हो गया और उसने एक सौ ज़िरहें (कवच) दीं, जिनके साथ हेलमेट और ढालें आदि भी थीं। कुछ रिवायतों के मुताबिक इस शस्त्र को ले जाने के लिए उसने ऊँट भी साथ दिए। युद्ध के बाद सफ़वान की ज़िरहें वापस करने के लिए इकट्ठी की गईं, तो उनमें से कुछ ज़िरहें कम थीं। चूंकि ज़िरहें वापस करने की ज़मानत दी गई थी, इसलिए नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफ़वान से बात की कि उनकी क़ीमत ले लो। लेकिन अब सफ़वान वह सफ़वान नहीं रहा था, जो ज़िरहें देते वक्त था। सफ़वान युद्ध-ए-हुनैन में साथ था, हालाँकि वह उस वक्त भी मुशरिक ही था और हुनैन के वाकिये के बाद उसने इस्लाम कबूल कर लिया था, अर्थात युद्ध में शामिल तो हुआ था, लेकिन मुशरिक था, मगर हुनैन के बाद इस्लाम कबूल कर लिया। इसलिए जब रसूल-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़िरहों की क़ीमत दिए जाने का फरमाया, तो सफ़वान कहने लगा: ला, या रसूलल्लाह! लि-अन्ना फी क़ल्बिल यौमा मा लम यकुन यौमइज़। नहीं, हे अल्लाह के रसूल! क्योंकि मेरे दिल की जो कैफियत आज है, वह उस दिन नहीं थी। और ज़्यादा लेने से इनकार कर दिया। इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चचा जाद भाई नौफल बिन हारिस से भी तीन हज़ार नेज़े उधार लिए और फरमाया: मैं तेरे इन नेज़ों को दुश्मन की पीठ में धंसता हुआ देखता हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस फरमान में यह खबर थी कि दुश्मन हार कर भागेगा और भारी जानी नुकसान उठाएगा। इसी तरह इब्ने अबी रबीआ से भी कुछ हथियार उधार लिए।

नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च नैतिक चरित्र की झलक इस बात पर गौर करने योग्य है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का फतह कर लिया था। अब यह एक पराजित कौम थी और युद्ध के नियमों और रिवाजों के अनुसार विजेता ही पराजित कौम की संपत्ति का मालिक हुआ करता था। लेकिन अब

जब युद्ध के लिए हथियारों की आवश्यकता पड़ी, तो एक-एक हथियार उधार लिया गया और इस वादे के साथ कि हम जितने हथियार ले रहे हैं, उतने ही वापस करेंगे।

इसी तरह अबू जहल के सौतेले भाई अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीस-चालीस हज़ार दिरहम क़र्ज़ लिए। रिवायत में है कि यह फतह-ए-मक्का के दिन मुसलमान हो गए थे।

एक रिवायत के मुताबिक आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश के तीन लोगों से क़र्ज़ लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफ़वान बिन उमय्या से पचास हज़ार दिरहम, अब्दुल्लाह बिन अबी रबीआ से चालीस हज़ार दिरहम और हुवैतिब बिन अब्दुल उज़्ज़ा से चालीस हज़ार दिरहम क़र्ज़ लिया। यह कुल एक लाख तीस हज़ार दिरहम बनते हैं। कुछ रिवायतों के मुताबिक नकद क़र्ज़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फतह-ए-मक्का के मौके पर ज़रूरतमंद सहाबा की मदद के लिए लिया था, जो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके बीच तक्सीम किया था और हर एक शख्स को कम-ओ-बेश पचास दिरहम दिए गए थे। और एक रिवायत के मुताबिक बनू जज़ीमा के मक़तूलीन की दियत (खून बहा का मुआवज़ा) आदि अदा करने के लिए यह रकम क़र्ज़ के तौर पर ली गई थी। मुमकिन है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अलग-अलग ज़रूरतों के लिए यह रकम क़र्ज़ के तौर पर ली हो, जिसमें माली मुआवना और दियतों की अदायगी शामिल है। अल्लाह बेहतर जानता है। व अल्लाह आ'लम।

(दाइरा मआरिफ सीरत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, भाग 9, पृष्ठ 236-238, बज़्म-ए-इकबाल लाहौर) (अस-सीरतुल हलबिया, भाग 3, पृष्ठ 153, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (सुनन अबू दाऊद, किताबुल बुयू, बाब फी तज़म्मिन... हदीस 3563)(मसनदुल इमाम अहमद बिन हंबल, भाग 5, पृष्ठ 614-615, हदीस 16524, आलमुल कुतुब, बेरूत)(अल-इस्तीआब, भाग 3, पृष्ठ 896-897, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)(सब्लुल हुदा वल् रिशाद, भाग 5, पृष्ठ 258, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)(ग़ज़वा-ए-हुनैन, बाशमील, पृष्ठ 43, नफ़ीस एकेडमी कराची)

इसकी बाकी तफ्सील इन शाअल्लाह आइंदा बयान करूंगा।

नमाज़ के बाद में दो जनाजा गायब (अनुपस्थिति में) भी पढ़ाऊंगा। एक श्रीमान ख़्वाजा मुख़्तार अहमद साहिब बट का है, जो ख़्वाजा अब्दुर्रहमान साहिब (स्यालकोट) के बेटे थे। पिछले दिनों यह बानवे (92) साल की उम्र में वफात पा गए हैं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। स्यालकोट में पैदा हुए। कानून की तालीम हासिल की। फिर एयरफोर्स में चले गए। वहाँ रिसालपुर से उन्होंने एयरफोर्स में ट्रेनिंग ली और 1974 तक पाक वायु सेना में बतौर कानूनी अफसर नुमायाँ खिदमात बजा लाते रहे। इसी साल दूसरे अहमदी अफसरों के साथ उनको भी नौकरी से फारिग कर दिया गया।

1974 में जमाअत अहमदिया के खिलाफ फसादात के नहायत नाज़ुक दौर में आपने हज़रत खलीफ़तुल मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़ेर-ए-रहनुमाई जमाअत के कानूनी कमीशन में खिदमत की और जमाअत की कोशिशों के सिलसिले में वज़ीर-ए-आला पंजाब हनीफ रमे से मुलाकात भी की। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत चौधरी ज़फरुल्लाह खान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु से गहरा ताल्लुक था और Essence of Islam की पहली भाग की तैयारी में हज़रत चौधरी ज़फरुल्लाह खान साहिब की मुआविनत का भी उनको मौका मिला। मर्कज़ी सतह पर आप बतौर डायरेक्टर फज़ल उमर फाउंडेशन और काफी साल दारुल क़ज़ा रबवा में बतौर क़ाज़ी भी खिदमत बजा लाते रहे।

क़ज़ा में उनके साथ मैंने भी कुछ अर्सा काम किया है। बड़े साइबुर्राय (सही राय वाले) थे और बड़े आजिज इंसान थे और खिलाफ़त से उनका ताल्लुक तो हमेशा से था और बाद में तो मेरे साथ भी बड़ा ताल्लुक रहा।

2002 में यह कनाडा मुंतकिल हो गए थे। वहाँ रीजनल अमीर के तौर पर खिदमात अंजाम देते रहे। नमाज़ों और तिलावत-ए-कुरआन करीम के पाबंद, माली कुरबानी में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने वाले मुखलिस फिदाई अहमदी थे। आपकी जिंदगी खिलाफ़त के साथ वफादारी, आजिजी और इखलास का आला नमूना थी। पीछे रहने वालों में पत्नी के अलावा एक बेटी और दो बेटे हैं और नवासे-नवासियाँ, पोते-पोतियाँ हैं।

उनकी पत्नी उम्मतुल कय्यूम साहिबा गुलाम अहमद अख्तर साहिब मरहूम की बेटी हैं। यह गुलाम अहमद अख्तर साहिब रेलवे में थे। डायरेक्टर के बड़े अहदे पर थे और हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में यह रिटायरमेंट के बाद कुछ अर्सा नाज़िर-ए-आला भी रहे हैं। हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ स्टेज पर तकरीरों में सिक्योरिटी की ड्यूटी भी देते रहे। बहरहाल, खिदमत करने वाला खानदान था। यह ख़्वाजा मुख़्तार साहिब डॉक्टर जाहिद खान साहिब, जो सदर क़ज़ा बोर्ड यूके हैं, उनके ससुर थे।

ख़्वाजा साहिब की बेटी आइशा खान लिखती हैं कि मैंने हमेशा उन्हें खिलाफ़त का इताअतगुज़ार पाया। तीनों बहन-भाइयों की तरबीयत इसी नहज पर की। यह हमें कहा कि जमाअत और खिलाफ़त की इताअत के अलावा हमारी जिंदगी का और कोई मकसद नहीं होना चाहिए। आपने 1974 में एयरफोर्स की नौकरी के अचानक खत्म हो जाने और फिर वकालत की प्राइवेट प्रैक्टिस में कुछ इतनी कामयाबी न मिलने पर भी कभी सब्र और अल्लाह तआला पर कामिल तवक्कुल नहीं छोड़ा। किसी इंसान के आगे हाथ नहीं फैलाया और अपनी हाजतें अल्लाह तआला के हुज़ूर ही पेश करते रहे। कहती हैं जब से मैंने होश संभाला है, उनको इबादतगुज़ार ही देखा है और नेकी के सब कामों में हिस्सा लेते ही पाया है। चंदा हमेशा महीने की शुरुआत में दे दिया करते थे और अगर पैसे होते तो पेशगी चंदा अदा कर दिया करते थे। ताल्लुकात निभाने में बहुत बढ़कर थे। खिलाफ़त से वफा का ताल्लुक तो था ही, जैसा कि मैंने कहा। गैर-मामूली ताल्लुक था। निजाम-ए-जमाअत के भी इंतहाई पाबंद थे, बल्कि उनके बाकी भाई भी निजाम-ए-जमाअत और खिलाफ़त से इंतहाई इखलास का ताल्लुक रखने वाले हैं, क्योंकि उनके वालिद साहिब ने उनकी तरबीयत की। तो यह पूरा खानदान ही अल्लाह के फ़ज़्ल से इंतहाई वफा का ताल्लुक रखने वाला है।

उनकी पत्नी भी, जैसा कि मैंने बताया, अख्तर साहिब की बेटी हैं, यह भी खिदमतगुज़ार खानदान है। बहरहाल, इन दोनों मियाँ-बीवी की तरबीयत की वजह से बच्चे भी जमाअत से इखलास का ताल्लुक रखने वाले हैं और खिदमत करने वाले हैं। अल्लाह तआला उनको, बच्चों को उनकी नेकियाँ जारी रखने की भी तौफ़ीक दे और मरहूम से मगफिरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

दूसरा जनाजा है, ज़िक्र है सईदा बेगम साहिबा, पत्नी नज़ीर अहमद साहिब। यह इंडिया की हैं। यह भी पिछले दिनों पचहत्तर (75) साल की उम्र में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फज़ल से मौसिया (वसीयत करने वाली) थीं। पसमांदगान में मियाँ के अलावा तीन बेटियाँ और चार बेटे शामिल हैं। ताहिर अहमद तारिक साहिब (नाइब नाज़िर इस्लाह-ओ-इरशाद कादियान) की वालिदा थीं। बतौर जमाअती नुमाइंदा यह ताहिर अहमद साहिब यहाँ इंग्लैंड में आए हुए थे। पीछे से उनकी वालिदा की वफात हो गई। इसलिए यह उनके जनाजे में शामिल नहीं हो सके। यह भी खिदमत करने वाला खानदान है। उनके छोटे बेटे, ताहिर साहिब के भाई शबीर अहमद साहिब भी सिलसिले के मुआल्लिम हैं और इसी तरह उनकी बेटी भी मुबल्लिग़-ए-सिलसिला जब्बार साहिब की पत्नी हैं। बाकी दो बेटे जो हैं, वह भी जमाअत की खिदमत करने वाले हैं। काफी खिदमतगुज़ार खानदान है। अल्लाह तआला उनसे मगफिरत का सुलूक फ़रमाए।

ताहिर अहमद तारिक साहिब लिखते हैं कि पिछले पच्चीस साल से साँस की तकलीफ में मुबतला थीं और बड़े सब्र और वक़ार से अपना बीमारी का अर्सा गुज़ारा। कभी शिकवा-शिकायत नहीं थी। उनका ताल्लुक चार कोट राजौरी, जम्मू-कश्मीर से था। खानदान में अहमदियत का नफ़ूज़ हज़रत काजी मुहम्मद अकबर भट्टी साहिब रहमहुल्लाह (सहाबी हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) के ज़रिए से हुआ। फिर उनके खानदान में अहमदियत फैली। बहुत दीनीदार और नमाज़ और रोज़े की पाबंद थीं। मामूली पढ़ी हुई थीं, लेकिन बचपन में हमें जब शाम होती तो कुरआनी दुआएँ, हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की नज़्में, अहादीस और अंबिया के वाकियात सुनातीं। तबीयत के अंदर नफासत का बहुत ज़्यादा अन्सार था। मिलनसार और अपने सारे अज़ीज़-ओ-अक़ारिब से मुहब्बत-ओ-शफ़कत का सुलूक करने वाली थीं। खिलाफ़त और निजाम-ए-सिलसिला से बहुत मुहब्बत थी और खुद अपने शौक से हमें वक़्फ किया और वक़्फ को निभाने की हमेशा तलक़ीन करती रहीं। और हमें कुरआन करीम की तालीम हासिल करने के लिए रोज़ाना तैयार करके भिजवातीं और इसी तरह दुनियावी तालीम की तरफ भी तवज्जो दी। सारी औलाद को अच्छी तालीम दिलवाई। अल्लाह तआला उनसे मगफिरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

(अल-फज़्ल इंटरनेशनल, 12 सितंबर 2025, पृष्ठ 2-5)

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
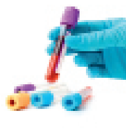
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली
हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा
सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

04 नवंबर 2018, रविवार (भाग दो) ... ...

(पिछले से जारी) बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुर्रहमान तशरीफ़ लाए और ज़ोहर व अस्र की नमाज़ें जमा करके पढ़ाईं।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कुछ निकाहों की घोषणा फ़रमाई। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने तशहुद, तऊज़ और ख़ुत्बा-ए-निकाह की मंसूना आयात की तिलावत के बाद निम्नलिखित ग्यारह निकाहों की घोषणा फ़रमाई:

1. अज़ीज़ा साइमा नवीद बसरा बिन्त नवीद अहमद बसरा साहिब आफ़ वर्जीनिया का निकाह अज़ीज़ तलहा रियाज़ (मुरब्बी सिलसिला नज़ारत इस्लाह व इरशाद मर्कज़िया रबवा) इब्न श्रीमान रियाज़ अहमद साहिब बसरा आफ़ रबवा के साथ तय पाया।

2. अज़ीज़ा सोबिया अहमद बिन्त श्रीमान नदीम अहमद पाल साहिब आफ़ वर्जीनिया का निकाह अज़ीज़ ख़ुर्रम वक़ार मलिक इब्न श्रीमान वक़ार अहमद मलिक साहिब आफ़ फिलाडेल्फिया जमाअत के साथ तय पाया।

3. अज़ीज़ा नबीला इनाम कौसर बिन्त श्रीमान इनामुल हक कौसर साहिब (अमीर जमाअत ऑस्ट्रेलिया) का निकाह अज़ीज़ फ़राज़ अहमद इब्न श्रीमान ताहिर अहमद खोखर साहिब के साथ तय पाया।

4. अज़ीज़ा इज़्ज़ा मीर बिन्त श्रीमान नबरास मीर साहिब आफ़ Willingboro का निकाह अज़ीज़ शहरयार सरवर इब्न श्रीमान मुहम्मद सरवर भट्टी साहिब के साथ तय पाया।

5. अज़ीज़ा मीराल फातिमा चौधरी बिन्त श्रीमान मुहम्मद मुबश्शिरुल्लाह साहिब आफ़ कनाडा का निकाह अज़ीज़ चौधरी नईम अहमद इब्न श्रीमान नदीम असलम अरशद साहिब के साथ तय पाया।

6. अज़ीज़ा हानिया मंसूर बिन्त मंसूर अहमद क़ुरैशी साहिब आफ़ डेट्रॉइट का निकाह अज़ीज़ कामिल बासित सलाम इब्न श्रीमान अब्दुस्सलाम मलिक साहिब के साथ तय पाया।

7. अज़ीज़ा मरयम सादिया सोसन मलिक बिन्त श्रीमान शाहिद सईद मलिक साहिब आफ़ वर्जीनिया का निकाह अज़ीज़ शुऐब महमूद मलिक इब्न श्रीमान खलील अहमद मलिक साहिब के साथ तय पाया।

8. अज़ीज़ा मंसूरा अहमद सिराजी बिन्त श्रीमान मोईनुद्दीन सिराजी साहिब आफ़ वाशिंगटन डी सी का निकाह अज़ीज़ अब्दुल कबीर आदिल इब्न श्रीमान अब्दुल कादिर शाजी साहिब के साथ तय पाया।

9. अज़ीज़ा मरयम तहसीन बिन्त तहसीन अहमद बाजवा साहिब आफ़ वर्जीनिया का निकाह अज़ीज़ तसलीम अहमद मुज़फ्फर इब्न श्रीमान मुज़फ्फर अहमद नजमी साहिब के साथ तय पाया।

10. अज़ीज़ा सजील जमील बिन्त श्रीमान मुहम्मद जमील साहिब आफ़ मिलवॉकी का निकाह अज़ीज़ नफ़ीस अहमद इब्न श्रीमान हफ़ीज़ अहमद साहिब के साथ तय पाया।

11. अज़ीज़ा मदीहा शमीम मलिक बिन्त श्रीमान शमीम अहमद मलिक साहिब आफ़ नॉर्थ कैरोलाइना का निकाह अज़ीज़ महमूद कअकी इब्न सईद कअकी साहिब (लेबनान) के साथ तय पाया।

निकाहों की घोषणा फ़रमाने के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि "दुआ कर लें। अल्लाह तआला ये सभी निकाह हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए।"

दुआ के बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़िरक़ैन को शरफ़-ए-मुसाफ़हा से नवाज़ा। बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रिहाइशगाह तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के मुताबिक छह बजकर पैंतीस मिनट पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मीटिंग रूम में तशरीफ़ लाए जहाँ नेशनल मजलिस-ए-आमिला यू.एस.ए. की हज़ूर-ए-अनवर के साथ मीटिंग शुरू हुई। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मीटिंग का आग़ाज़ दुआ के साथ फ़रमाया।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर अमीर साहिब ने अर्ज़ की कि इस वक़्त जो यहाँ नाइब उमरा और सेक्रेटरीयां हाज़िर हैं, उनकी कुल तादाद 32 है।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नाइब अमीर डॉक्टर हमीदुर्रहमान साहिब से उनके सुपुर्द काम के मुताल्लिक इस्तिफ़सार फ़रमाया।

डॉक्टर हमीदुर्रहमान साहिब ने अर्ज़ की कि मेरे सुपुर्द नॉर्थ वेस्टर्न स्टेट्स की जमाअतें हैं। अमीर साहिब की हिदायात के मुताबिक जब भी ज़रूरत होती है, मैं इन जमाअतों का दौरा करता हूँ।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप ख़ुद से इन जमाअतों का दौरा करने का प्रोग्राम नहीं बनाते? आपको ख़ुद इन जमाअतों के दौरे जात करने चाहिएं। इन जमाअतों की तजनीद क्या है और इनमें से चंदा आम अदा करने वाले कितने हैं और इनमें से कितने कमाने वाले हैं? सबसे बड़ी जमाअत कौन सी है और उसकी तजनीद क्या है?

डॉक्टर साहिब ने अर्ज़ की कि सबसे बड़ी जमाअत LA East है। चंदा अदा करने वालों की तादाद के हवाले से मुझे अमीर साहिब की तरफ से latest डेटा मुहैया नहीं कराया गया।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ये तो आपको चाहिए था कि आप अपनी जमाअतों का डेटा उन्हें मुहैया कराते, बजाए इसके कि वो आपको मुहैया करें। आप अपनी जमाअतों के नुमाइंदा हैं। आपको चाहिए कि आप ये अद्दो-शुमार मुहैया करें।

* LA East में कमाने वाले अहमदियों की तादाद के हवाले से नेशनल सेक्रेटरी माल ने अर्ज़ की कि वहाँ कमाने वाले चंदा देने वालों की तादाद 155 है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के दरयाफ़्त करने पर सेक्रेटरी माल ने अर्ज़ की कि हमने चंदा की अदायगी के हिसाब को मद्द-ए-नज़र रख कर लोगों की इनकम का हिसाब लगाया है तो मालूम हुआ है कि ये इनकम poverty line से नीचे है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ऐसे लोगों के लिए आपको चैरिटी की ज़रूरत पड़ती होगी। आपको मर्कज़ की मदद की ज़रूरत है तो बताएं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया: लोगों को उनकी असल आमद पर चंदा अदा करने के हवाले से आपने क्या इक़दामात किए हैं?

इस पर सेक्रेटरी माल ने अर्ज़ की कि हमने हर जमाअत को अद्दो-शुमार मुहैया किए हैं कि आपके लाज़िमी चंदा जात की ये सूरत-ए-हाल है। पहला क़दम तो यही है कि इन जमाअतों में awareness पैदा की जाए।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तर्बियत से दरयाफ़्त फ़रमाया कि LA East जहाँ आपकी मस्जिद है, वहाँ मग़रिब व इशा की नमाज़ों की अदायगी के लिए कितने लोग आते हैं? सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि मेरे पास इस वक़्त अद्दो-शुमार मौजूद नहीं हैं। इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आप बग़ैर तलवार के मैदान-ए-जंग में आ गए हैं।

* इसके बाद नाइब अमीर डॉक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब ने अर्ज़ की कि ख़ाकसार नाइब अमीर के इलावा नेशनल सेक्रेटरी समई व बसरी है और मेरे सुपुर्द मीडिया टीम भी है। (इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि नेशनल सेक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारिजिया के क़वाइद निकाल कर रखें।)

* इसके बाद नाइब अमीर वसीम मलिक साहिब ने बताया कि उनके सुपुर्द मुल्क भर में जमाअतों का दौरा करके मस्जिद फंड इकट्ठा करना है। इसी तरह यू.एस.ए. जमाअत का IT डिपार्टमेंट भी उनके सुपुर्द है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया: मस्जिद फंड के लिए कितनी रक़म इकट्ठी करते हैं? दुरान-ए-साल कितनी रक़म जमा हुई है?

इस पर मौसूफ़ ने अर्ज़ की कि 2018-2019 की पहली सह माही में हमने 2 लाख 18 हज़ार डॉलर जमा किए हैं। जबकि गुज़िश्ता माली साल में 3.9 मिलियन डॉलर जमा किए गए थे।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि इसमें से कितनी रक़म ख़र्च हुई है। अमीर साहिब ने अर्ज़ की कि सारी रक़म ख़र्च हो चुकी है, बल्कि 'मस्जिद फंड' इस वक़्त ख़सारे में है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसका मतलब है कि इस वक़्त 'मस्जिद फंड' में आपके पास कोई रक़म नहीं है। आइंदा मस्जिदें बनाने का कोई मंसूबा नहीं है? आइंदा दो-तीन साल में किसी भी मस्जिद का प्रोजेक्ट नहीं है?

इस पर नाइब अमीर फ़लाहुद्दीन शम्स साहिब जो शोबा जाएदाद की निगरानी भी करते हैं, उन्होंने अर्ज़ की कि Zion, Illinois में हम नई इमारत ख़रीद रहे हैं। वहाँ नई मस्जिद तामीर होगी इंशाअल्लाह। इसका आग़ाज़ हो चुका है। हमने दस एकड़ की जगह ख़रीदी है और उसकी सफ़ाई का काम शुरू हो चुका है। अगले साल तक हमारा मस्जिद की तामीर मुकम्मल करने का मंसूबा है। Zion के लिए स्पेशल फंड है। वहाँ इस वक़्त हमारे पास तीन बिल्डिंग्स हैं, जिनमें से दो पहले ही फ़रोख़्त की जा चुकी हैं और एक मस्जिद मुरब्बी

हाउस है। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर मौसूफ़ ने अर्ज़ की कि नई जगह जो ख़रीदी है, वो मौजूदा जगह से ज़्यादा दूर नहीं है। तीन से चार मील का फ़ासिला है। अहमदियों की अक्सरियत भी उसी इलाक़े में रिहाइशपज़ीर है। वहाँ छोटी जमाअत है, इसलिए 5500 मुरब्बा फुट की मस्जिद तामीर कर रहे हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर मौसूफ़ ने अर्ज़ की कि जमाअत की तजनीद 189 है। वहाँ इस वक़्त जुमा पर 12 से 15 मर्द और इतनी ही ख़वातीन शामिल होती हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: 189 में से सिर्फ़ 25 से 30 लोग जुमा पर हाज़िर होते हैं। वहाँ पर तर्बियत की ज़रूरत है।

* अमीर साहिब ने अर्ज़ की कि अबू बक्र सईद साहिब इंटर्नल ऑडिटर भी उसी जमाअत से हैं। इस पर अबू बक्र सईद साहिब ने अर्ज़ की कि ये तादाद दुरुस्त नहीं है। जुमा पर 45 के करीब हाज़िरी होती है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ये तादाद भी कोई हौसला अफ़्ज़ा नहीं है। तिहाई भी नहीं है।

अबू बक्र सईद साहिब ने अर्ज़ की कि मैं वहाँ से 45 मिनट की ड्राइव पर रहता हूँ, इसलिए मैं जुमा मिलवॉकी जमाअत में अदा करता हूँ। मिलवॉकी और Zion की जमाअत के एक ही मुबल्लिग़ हैं। वो महीने में एक जुमा Zion में अदा करते हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि आपको वहाँ मुस्तकिल मुबल्लिग़ की ज़रूरत नहीं है? इस पर अमीर साहिब ने अर्ज़ की कि मज़ीद मुबल्लिग़ीन मिलेंगे तो वहाँ पर भी मुबल्लिग़ का तक़र्रुर करने का प्लान है। Zion मिलवॉकी और शिकागो के दरमियान है। मिलवॉकी में भी मुबल्लिग़ मौजूद है और शिकागो में भी मुबल्लिग़ है। हमारा इरादा है कि Zion में भी मुरब्बी हाउस बनाएं और उसके बाद वहाँ मुबल्लिग़ का तक़र्रुर हो जाए।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर अमीर साहिब ने अर्ज़ की कि हमारी कुल 74 जमाअतों में से 56 जमाअतों में मस्जिदें मौजूद हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी जाएदाद ने अर्ज़ की कि इन 56 मस्जिदों में से 19 बाक़ायदा purpose-built मस्जिदें हैं, जबकि बाक़ी 37 चर्च और दूसरी इमारतें हैं, जिन्हें मस्जिद में तब्दील किया गया है। हज़ूर-ए-अनवर के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी जाएदाद ने अर्ज़ की कि अमरीका में जमाअती प्रॉपर्टीज़, जिनमें बाज़ ख़ाली ज़मीन के क़तए भी शामिल हैं, उनका कुल रक़बा 1000 एकड़ से ज़्यादा होगा। उनकी मालियत 120 से 122 मिलियन डॉलर के करीब होगी।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस हिसाब से आपकी इंश्योरेंस तो बहुत कम है। सेक्रेटरी जाएदाद ने अर्ज़ की कि जो ख़ाली ज़मीन है, जहाँ कोई इमारत इत्यादि तामीर नहीं हैं, उनकी इंश्योरेंस नहीं है।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी इशाअत ने अर्ज़ की कि गुज़िश्ता दो सालों में हमने चार किताबें मुकम्मल की हैं, जिनमें 'सीरत-ए-ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम' (Chief of the Prophets) और 'करना कर' शामिल हैं। मर्कज़ से मंज़ूरी आ चुकी है। सीरत-ए-ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो मर्कज़ से शाया होगी, लेकिन 'करना कर' यहाँ अमरीका से शाया होगी। शायद अन्सारुल्लाह शाया करेगी।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी इशाअत ने अर्ज़ की कि दस हज़ार की तादाद में तो हम शाया नहीं कर सकते, क्योंकि यहाँ इतनी बड़ी मार्केट नहीं है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसका अंग्रेज़ी में तर्जुमा हो रहा है। अंग्रेज़ी किताबों की माँग तो सारी दुनिया में है। अगर आप शाया करें तो यूके की जमाअत ही आपसे दस हज़ार कॉपी ख़रीद लेगी। लेकिन अमेरिकन अंग्रेज़ी में spelling इत्यादि का फ़र्क़ होता है, इसलिए आप वकीलुत्तसनीफ़ साहिब लंदन को भिजवा दें। मर्कज़ इसे शाया कर सकता है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई (ये नोट कर लें। अगर इसका तर्जुमा हो गया है तो इसे लंदन में शाया कर दें।)

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तर्बियत से जमाअतों की तादाद और तजनीद के हवाले से दरयाफ़्त फ़रमाया। इस पर सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि अमरीका में 74 जमाअतें हैं, जबकि कुल तजनीद 20 हज़ार 394 है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हाल ही में थाईलैंड, श्रीलंका और नेपाल इत्यादि से काफ़ी अहमदी रिफ्यूजी अमरीका मुंतकिल हुए हैं। उनको भी तजनीद में शामिल करें।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि जमाअत में नमाज़ सेंटर्स की तादाद 200 से लेकर 275 तक है। तादाद तब्दील होती रहती है, क्योंकि बहुत से नमाज़ सेंटर लोगों के ज़ाती घरों में बने हुए हैं। जिन लोगों के घर मस्जिद से दस से पंद्रह मिनट की ड्राइव पर हैं, वहाँ सलात सेंटर नहीं बनाए जाते, लेकिन जिन लोगों के घर मस्जिद से आधे घंटे की ड्राइव या उससे ज़्यादा दूरी पर हैं, वहाँ सलात सेंटर बनाए गए हैं। गुज़िश्ता कुछ सालों में सलात सेंटर्स की तादाद 200 से ऊपर ही रही है।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि खुद्दाम, अत्फ़ाल और अन्सार को मिला कर तादाद 8500 के करीब बनती है। हमने सर्वे किया था। इस सर्वे के मुताबिक 35 फ़ीसद लोग मस्जिदों में बाक़ायदा नमाज़ अदा करते हैं। बाक़ी 22 फ़ीसद का कहना है कि वो हफ़्ते में दो से तीन मर्तबा मस्जिद जाते हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि स्प्रिंग वैली, बैतुर्रहमान की जमाअत में नमाज़ पढ़ने वालों की तादाद कम है। यहाँ हमें इस हवाले से challenges का सामना है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर इज़्हार हनीफ़ साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज अमरीका ने अर्ज़ की कि यहाँ पर मर्दो ख़वातीन को मिला कर जुमा पर कुल हाज़िरी 350 के करीब होती है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ये तो पांचवें हिस्से से भी कम है। अगर लोग नहीं आ रहे तो इसके लिए आप क्या कोशिश कर रहे हैं? लोगों को मस्जिद बुलाने के लिए शोबा तर्बियत ने क्या इक़दामात किए हैं?

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि बैतुर्रहमान के पास तीन जमाअतें हैं और यहाँ एक मुक़ामी जमाअत के आमिला मेंबरों की तादाद 20 के करीब होगी और तीन जमाअतों के आमिला मेंबरों की तादाद 60 होगी। इसी तरह तीनों जमाअतों में खुद्दामुल अहमदिया और अन्सारुल्लाह की आमिला मेंबरों की तादाद 60-60 होगी। इस तरह 180 तो सिर्फ़ आमिला मेंबर ही बन जाते हैं। अगर आमिला मेंबर ही नमाज़ों पर आना शुरू हो जाएं तो मौजूदा तादाद से तीन गुना इज़ाफ़ा हो जाएगा।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: नमाज़ बुनियादी चीज़ है। मैं तो गाहे-ब-गाह, अगर महीने में एक मर्तबा नहीं तो दो महीने में एक मर्तबा तो ज़रूर नमाज़ की तरफ़ तवज्जोह दिलाता हूँ। ये बहुत ज़रूरी है। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर तर्बियत ठीक होगी तो सेक्रेटरी माल को चंदा की वसूली के हवाले से भी कोई मसला नहीं होगा। इसलिए तर्बियत बहुत अहम ज़िम्मेदारी है। सबसे पहले नमाज़ की तरफ़ तवज्जोह दें और उसके बाद माली कुर्बानी की तरफ़ तवज्जोह दें। इसके लिए आइंदा एक-दो हफ़्ते में बाक़ायदा एक मंसूबा बनाएं। जो भी मंसूबा बनाएं, उसकी एक नक़ल मुझे भी भिजवाएं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि गुज़िश्ता तीन सालों में उन्होंने 20 से 30 जमाअतों का दौरा किया है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुबल्लिग़ीन से भी मदद लिया करें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि गुज़िश्ता दो-तीन साल से शोबा तर्बियत के पास बाक़ायदा कोई मुबल्लिग़ नहीं है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आपके पास मुबल्लिग़ीन की कमी है। पाकिस्तान से मुबल्लिग़ीन को यहाँ का वीज़ा नहीं मिलता। घाना के मुबल्लिग़ीन को तो वीज़ा मिल सकता है। वहाँ से भी मुबल्लिग़ भिजवाए जा सकते हैं।

निज़ हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिग़ इंचार्ज साहिब से फ़रमाया: आपको चाहिए कि अमरीका से भी ज़्यादा से ज़्यादा लड़कों को जामिया अहमदिया भिजवाएं। इसके लिए बाक़ायदा मंसूबा बनाएं और कोशिश करें कि अफ़्रीकन अमेरिकन में से अगर दस नहीं तो कम-अज़-कम एक या दो अफ़्रीकन अमेरिकन लड़के ज़रूर जामिया जाएं। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर आमिला के एक मेंबर ने अर्ज़ की कि हमें वाक़िफ़ीन-ए-नौ के दस फ़ीसद बच्चों को जामिया भिजवाने का टारगेट मिला था। दुरान-ए-साल यहाँ से तीन वाक़िफ़ीन-ए-नौ जामिया भिजवाए गए हैं।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि ये तो टारगेट का तिहाई बनता है। कोशिश करें कि अमरीका से ज़्यादा से ज़्यादा बच्चों को जामिया भिजवाया जाए।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर अफ़्रीकन अमेरिकन आमिला मेंबर अबू बक्र साहिब ने अर्ज़ की कि उनका एक बेटा है। उनकी ख़्वाहिश है कि वो हाई स्कूल की पढ़ाई मुकम्मल करने के बाद जामिया अहमदिया में दाख़िल हो।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: और भी घाना के लोग, जिनके बच्चे वक़्फ़-ए-नौ में हैं, उन्हें जामिया अहमदिया में भिजवाने के हवाले से कोशिश की जाए।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अबू बक्र सईद साहिब से फ़रमाया: आपने अफ़्रीकन अमेरिकन वाक़िफ़ीन के इलावा वेस्ट अफ़्रीका से ताल्लुक़ रखने वाले दस लड़के मुझे जामिया के लिए देने हैं। ये आपका टारगेट है और आपने इसे ज़रूर हासिल करना है।

इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तर्बियत से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया: अगर आप अपनी आमिला के मेंबरान के पीछे पड़ जाएं और उन्हें नमाज़ बाजमाअत की अहमियत का एहसास दिलाएं तो इससे नमाज़ियों की तादाद में काफ़ी इज़ाफ़ा हो जाएगा।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर जनरल सेक्रेटरी ने अर्ज़ की कि 60 फ़ीसद जमाअतें अपनी रिपोर्ट्स भिजवाती हैं। जो नहीं भिजवातीं, उन्हें बार-बार याददिहानी करवाई जाती है और अब इसमें इज़ाफ़ा हो रहा है।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तबलीग से फ़रमाया: आप स्पैनिश एरिया पर ज़्यादा तवज्जोह दे रहे हैं। पूरे अमरीका

में भी तबलीग के हवाले से आपका कोई मंसूबा है? इस पर नेशनल सेक्रेटरी तबलीग ने अर्ज़ की कि शूरा में भी तबलीग के हवाले से तजवीज़ें थीं, जिनकी हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मंज़ूरी अता फ़रमाई थी। हम उन पर काम कर रहे हैं, इसी तरह गाहे-ब-गाह हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तरफ़ से जो भी हिदायात मिलती हैं, उस पर अमल करने की कोशिश होती है। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यूके में मुबल्लिग़ीन की मीटिंग के मौक़े पर फ़रमाया था कि 'इस्लाम' कॉफ़ी और केक पर ही इक्तेफ़ा न करें। इसलिए अब हम मज़ीद चीज़ों पर भी ग़ौर कर रहे हैं। इसी तरह रिव्यू ऑफ़ रिलिजन्स को तबलीग के लिए इस्तेमाल करने के हवाले से हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई थी। हमने इसके लिए एक मेंबर मुक़र्रर किया है। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हमसायों को तबलीग करने के हवाले से हिदायत फ़रमाई थी। इस हवाले से भी कोशिश की जा रही है।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि 'इस्लाम, केक और कॉफ़ी' के प्रोग्राम के ज़रिए आपके कुल कितने रवाबते क़ायम हुए हैं?

इस पर सेक्रेटरी तबलीग ने अर्ज़ की कि गुज़िश्ता ढाई सालों में 'इस्लाम, केक और कॉफ़ी' की कुल 4100 नशिस्तें मुनअक़द हुईं, जिनके ज़रिए 11 हज़ार 300 लोगों से राबता हुआ। लेकिन वो लोग जिनको हमने अपने डेटाबेस में दाख़िल किया है, उनकी तादाद 1027 बनती है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मुस्लिम काउंसिल या मुस्लिम कम्युनिटी की तरफ़ से मुख़ालिफ़त का सामना भी होता है? अभी उन्होंने एक ओपन लेटर भी लिखा था, जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़ात पर काफ़ी एतराज़ात किए थे। आपने उनके जवाब भी दिए हैं?

नेशनल सेक्रेटरी तबलीग ने अर्ज़ की कि अभी तक उनके जवाब नहीं दिए।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इन एतराज़ात के फ़ौरन जवाबात दिए चाहिएं। वर्ना बाज़ मुसलमान जो ये एतराज़ पढ़ेंगे, वो सोचेंगे कि ये एतराज़ ठीक हैं। आपको चाहिए कि कम-अज़-कम पाँच सौ लोगों की एक टीम बनाएं, जो कि सोशल मीडिया पर फ़ौरन जवाबात दें। इसके बाद अगर आप इस हवाले से तफ़्सीली जवाबात देना चाहते हैं तो उन्हें viral करने से पहले उनकी मंज़ूरी मुझ से लें। इसलिए ग़ैर अहमदियों ने जो ख़त लिखा था, उसका कल तक कम-अज़-कम 100 अहमदियों को चाहिए कि जवाब दे दें। आज रात उसी काम पर लगाएं।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तालीम आतिफ़ मियां से फ़रमाया कि आप सेक्रेटरी तालीम हैं। मैं तो समझा था कि आप जमाअत के इकनॉमिक एडवाइज़र होंगे, क्योंकि इमरान खान ने तो आपको एडवाइज़री कमेटी का मेंबर बनाने से इनकार कर दिया था।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई: उन्हें फाइनेंस कमेटी का मेंबर भी होना चाहिए। हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी तालीम ने अर्ज़ की कि उनके पास इस वक़्त यूनिवर्सिटियों में तालीम हासिल करने वाले तुलबा का डेटा मौजूद नहीं है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आपके पास ये डेटा तो होना चाहिए। मैंने ख़ुद्दामुल अहमदिया और लज्ना अमाउल्लाह को कहा है कि वो शोबा उमूर-ए-तुलबा और मुहतमिम उमूर-ए-तुलबा मुक़र्रर करें, जिनका काम ही तुलबा की निगरानी करना हो। आप उनसे डेटा हासिल कर लें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी तालीम ने अर्ज़ की कि हमने मुख़्तलिफ़ age groups के लिए मुख़्तलिफ़ प्रोग्राम रखे हैं। मिसाल के तौर पर हमने नर्सरी से लेकर आठवीं क्लास के बच्चों के लिए Maths का एक प्रोग्राम रखा है, जो कि वो गर्मियों में मुकम्मल करेंगे।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि 12th grade के इम्तिहानों में बच्चों के नतीजे कैसे आ रहे हैं?

इस पर सेक्रेटरी तालीम ने अर्ज़ की कि नतीजे बहुत ज़्यादा अच्छे नहीं हैं। इस हवाले से हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि इसे शूरा में रखें। इस पर मौसूफ़ ने कहा हमने ख़ुद्दामुल अहमदिया के साथ भी इसे discuss किया है और हज़ूर-ए-अनवर की हिदायत के मुताबिक शूरा में भी रखेंगे कि किस तरह हम अपने बच्चों के तालीमी मेयार को बेहतर कर सकते हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सबसे पहले तो डेटा इकट्ठा करें कि कितने बच्चे, बच्चियाँ हैं, जो यूनिवर्सिटियों में तालीम हासिल कर रहे हैं और कितने स्कूलों में हैं। आपके पास ये सारी मालूमात होनी चाहिए कि उनके नाम, उनकी उम्रें, उनकी तालीम, उनके आगे मुस्तकबिल के प्लान क्या हैं। फिर हर जमाअत में एक काउंसलिंग का सिस्टम भी होना चाहिए। कम-अज़-कम बड़े शहरों की बड़ी-बड़ी जमाअतों में ये सिस्टम ज़रूर मौजूद होना चाहिए।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आम तौर पर तुलबा मुख़्तलिफ़ इदारों और ऑर्गनाइज़ेशन्स से रहनुमाई लेते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए। बाज़ तो कमर्शल इदारे भी हैं, जो बाक़ायदा फीस लेकर बताते हैं कि आपको क्या करना चाहिए। इसलिए अगर आप हाई स्कूल के तुलबा को उनके मुस्तकबिल के हवाले से काउंसलिंग मुहैया करें कि उन्हें कौन सी फील्ड इख़्तियार करनी चाहिए और कौन सी फील्ड अहम है, तो इससे उनको बहुत फ़ायदा होगा। हमारे तुलबा को ये पता होना चाहिए कि उन्होंने आगे क्या करना है। यहाँ तो काफ़ी पढ़े-लिखे लोग मौजूद हैं, इसलिए अगर आप हर रीजन में ऐसे लोगों पर मुश्तमिल एक कमेटी बना लें तो वो तुलबा को काउंसलिंग मुहैया कर सकती है। अगर हर जमाअत या हर रीजन में कमेटी बनाना मुमकिन नहीं तो कम-अज़-कम एक सेंट्रल कमेटी तो होनी चाहिए, जो कि तुलबा की रहनुमाई कर सके। बजाए इसके कि वो कहीं और पैसे ख़र्च करें, वो काउंसलिंग के लिए आपके पास आएं।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी इशाअत से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि आप अख़बारों में आर्टिकल इत्यादि लिखने के इलावा और क्या-क्या काम करते हैं?

इस पर सेक्रेटरी इशाअत ने अर्ज़ की: हम बुक स्टोर को manage कर रहे हैं और अब Amazon पर किताबें फ़रोख़्त करना शुरू किया है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अब एडिशनल वकीलुल इशाअत बराए-ए-तर्सील का तक़र्रुर हो चुका है। इसलिए आपका उनके साथ राबता होना चाहिए। जो नई कोई किताब छपे, उसकी मालूमात आपको मिलनी चाहिए और आप फिर उन्हें बताएं कि आपको कितनी किताबों की ज़रूरत है?

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी इशाअत ने अर्ज़ की कि जहाँ-जहाँ मुबल्लिग़ीन मुतअय्यन हैं, वहाँ लाइब्रेरियां मौजूद हैं, लेकिन पब्लिक के लिए बाज़ जगहों पर लाइब्रेरियां नहीं हैं, क्योंकि वहाँ जगहें नहीं हैं।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि आइंदा जब आप मस्जिद इत्यादि के नक़्शे की ड्रॉइंग्स बनाते हैं, तो उसमें लाइब्रेरी के लिए भी जगह मुक़र्रर किया करें।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने अर्ज़ की कि हमारे डेटाबेस में तक़रीबन 450 लोगों का डेटा है और गुज़िश्ता साल 12 रिश्ते तय हुए हैं। 80 लड़के, जबकि 230 से ज़्यादा लड़कियाँ हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने अर्ज़ की कि लड़कों की उम्रें ज़्यादा तर 25 से 35 साल हैं और उनकी तालीम के मेयार भी मुख़्तलिफ़ हैं। दूसरी तरफ़ लड़कियाँ काफ़ी पढ़ी-लिखी हैं। इस वजह से भी मसाइल का सामना है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने अर्ज़ की कि उनका इंटरनेशनल रिश्ता नाता कमेटी के साथ राबता है और उन्होंने बाज़ तजवीज़ें भी भेजी हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस हवाले से मर्कज़ से बाक़ायदा राबता रखें।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी रिश्ता नाता ने अर्ज़ की कि अभी तक दस रिश्ते तय हो चुके हैं। इनमें वो शामिल हैं, जिनके निकाह हो चुके हैं।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारिजिया से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि आपका इस साल का क्या प्लान है? आपके शोबा के सुपुर्द कौन से काम हैं? क्या आपको इन कामों का पता है?

इस पर नेशनल सेक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारिजिया ने अर्ज़ की कि तहरीक-ए-जदीद के क़वाइद के मुताबिक गवर्नमेंट अथॉरिटीज़, मज़हबी ऑर्गनाइज़ेशन्स और दूसरे इदारों के साथ रवाबते क़ायम करना। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया में जमाअती नुक़्ता-ए-नज़र को उजागर करना, उनके काम हैं।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया का काम तो आप नहीं कर रहे।

सेक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारिजिया ने अर्ज़ की कि हज़ूर, ये काम मीडिया टीम के सुपुर्द है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आज से ये काम मैं आपके सुपुर्द कर रहा हूँ। एक कमेटी बनाएं या टीम बनाएं, जो कि मीडिया, प्रेस और इससे मुताल्लिक़ सारे मुआमलात संभाले। आइंदा से जमाअती नुक़्ता-ए-नज़र को मीडिया में उजागर करने का काम आपके सुपुर्द है। अगर कहीं जमाअती पॉलिसी का कोई मसला होता है तो मीडिया या प्रेस में भिजवाने से पहले मुझ से हिदायत लिया करें। जमाअती statements और प्रेस रिलीज़ या इंटरव्यूज़ देने के लिए आप जमाअती नुमाइंदा होंगे।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने डॉक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब इंचार्ज मीडिया टीम से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया: अगर आपका मीडिया टीम के हवाले से कोई प्लान है या जो भी हिदायात हैं, वो सेक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारिजिया को दे दें। आज से शोबा उमूर-ए-ख़ारिजिया ये मुआमलात देखेगा।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: शोबा उमूर-ए-ख़ारिजिया ही दूसरी जमाअतों और कम्युनिटीज़ से दोस्ताना ताल्लुक़ात रखने की कोशिश करेगा। मैं आपको एक नई assignment ये दे रहा हूँ कि आपने नॉर्थ अमेरिकन मुस्लिम काउंसिल के साथ दोस्ताना ताल्लुक़ात बनाने हैं। उन्होंने जो जमाअत पर एतराज़ात इत्यादि लगाए हैं, उनके जवाब भी आपने देने हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप एक टीम बनाएं। आपकी बाज़ statements जो हालात-ए-हाज़िरा के मसाइल के हवाले से होती हैं और कुछ बयानात का ताल्लुक़ इंटरनेशनल हालात और बाख़ुसूस पाकिस्तान में अहमदियों के हवाले से होता है। इनमें आपको एहतियात से काम लेना होगा। जहाँ भी पाकिस्तानी अहमदियों का मुआमला हो, वहाँ आपने मेरी इजाज़त के बग़ैर अज़-ख़ुद कोई बयान नहीं देना।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप

बराह-ए-रास्त अमीर साहिब की हिदायात के तहत काम करेंगे। आप बिल्कुल आज़ाद नहीं हैं। इसके इलावा मेरे प्रेस एंड मीडिया सेक्शन से भी राबता रखें। अगर कोई इमरजेंसी सूरत-ए-हाल है तो आप बज़रीया फ़ोन या ई-मेल आबिद वहीद साहिब के साथ राबता कर सकते हैं। ये दफ़्तर 24 घंटे खुला होता है। सिर्फ़ आबिद साहिब ही नहीं, बल्कि और भी स्टाफ़ मेंबर वहाँ काम करते हैं। वहाँ काम करने वालों के राबता नंबर हासिल कर लें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: दूसरी बात ये है कि ज़रूरी नहीं अख़बारों में आने वाले हर इश्यू पर ही बयान जारी किया जाए। बसा-औक़ात बाज़ मुआमलात का ताल्लुक़ जमाअत के साथ नहीं होता, ऐसे इश्यूज़ में दख़लंदाज़ी करने की ज़रूरत नहीं है। ऐसी चीज़ों का हिस्सा न बनें। दूसरे मुसलमानों को ख़ुद जवाब देने दें। हाँ, अगर प्रेस ख़ुद आपके पास आता है तो फिर आप उनके सवालों के जवाबात दे सकते हैं, लेकिन पॉलिसी के मुआमलात के हवाले से एहतियात करनी होगी। अगर कोई policy matter हो, जिसका जवाब देना निहायत ज़रूरी हो, वहाँ आपका बयान मोहतात होना चाहिए और फिर बाद में मुझ से ऐसे मुआमलात के मुताल्लिक़ हिदायत ले लें। हिदायत लेने के बाद आप फिर हत्मी बयान जारी कर सकते हैं।

* इसके बाद नेशनल सेक्रेटरी उमूर-ए-आमा ने रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि हमारे ज़्यादा तर मुआमलात शादी-ब्याह के झगड़ों के हवाले से होते हैं। गुज़िश्ता ढाई साल में हमारे पास 42 खुलअ और 18 तलाक़ के केस आए हैं। इनमें से 44 केसों को हल करने में कामयाब हुए हैं। 15 केसों की सूरत में हमने सुलह करवाई है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सुलह तो हो जाती है, लेकिन साल बाद बाल-उमूम औरतें फिर अपने खाविंदों की शिकायतें लेकर आ जाती हैं कि उनका रवैया ठीक नहीं है। इसलिए इन मुआमलात को हल करने के बाद ऐसे लोगों के साथ राबता भी रखना चाहिए। कम-अज़-कम सेक्रेटरी तर्बियत का ऐसे लोगों के साथ ज़रूर राबता होना चाहिए।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी तर्बियत ने अर्ज़ की कि नेशनल लेवल पर भी इस्लाही कमेटी क़ायम है और इसी तरह मुक़ामी सतह पर 35 इस्लाही कमेटियां क़ायम हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी तर्बियत को हिदायत देते हुए फ़रमाया कि सदर लज्ना भी इस्लाही कमेटी का मेंबर होती है, इसलिए आपकी पहुँच तो हर घर तक होनी चाहिए। जहाँ कहीं भी मसले का आग़ाज़ हो, उसी वक़्त आपको रिपोर्ट मिलनी चाहिए। इसके लिए आप प्लान बनाएं कि लज्ना की तरफ़ से आपको मालूमात मिल जाएं। बजाए इसके कि मुआमला इस हद तक चला जाए जहाँ उसका हल ही मुमकिन न हो, उसे शुरू से ही देख लिया जाए। या बजाए इसके कि मुआमला क़ज़ा या उमूर-ए-आमा में जाए, इस्लाही कमेटी को पहले ही मुआमले को सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी उमूर-ए-आमा से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि इन मुआमलात के इलावा जो रिफ्यूजी आए हैं, उन्हें नौकरियां इत्यादि दिलवाने में मदद करना भी आपका काम है। इस हवाले से क्या कर रहे हैं?

इस पर सेक्रेटरी उमूर-ए-आमा ने अर्ज़ की कि हमने अमरीका में चार मुख़्तलिफ़ जगहों पर सेंटर्स बनाए हुए हैं। गुज़िश्ता एक या डेढ़ साल में हमने 28 फैमिलियों की मदद की है। इस हवाले से हम खुद्दामुल अहमदिया और शोबा सनअत व तिजारत के साथ मिल कर काम कर रहे हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी सनअत व तिजारत से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया कि आप इस हवाले से क्या कर रहे हैं? वहाँ से जो आते हैं, उनको ज़बान का भी काफ़ी मसला होता है। मकैनिक या कारपेंटिंग या इस क़िस्म के काम कर सकते हैं, लेकिन ज़बान की वजह से उन्हें मुश्किल होती है। इस पर सेक्रेटरी सनअत व तिजारत ने अर्ज़ की कि जब लोग आते हैं तो हम उनसे पूछते हैं कि वो क्या करना चाहते हैं या पाकिस्तान में वो क्या करते थे। अगर वो construction का काम करते हों तो उनका राबता किसी contractor से करवा दिया जाता है। इस तरह वो आहिस्ता-आहिस्ता माहौल को देख कर बाज़ अपना बिजनेस भी शुरू कर देते हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि बाज़ ख़वातीन हैं जो नौकरियां कर रही हैं, लेकिन वो ये नौकरियां छोड़ कर कुछ और करना चाहती हैं। आपने ऐसी ख़वातीन के लिए भी कोई मंसूबा बनाया है?

इस पर सेक्रेटरी सनअत व तिजारत ने अर्ज़ की कि बाज़ ख़वातीन के मुताल्लिक पता चलता है कि वो सिलाई-कढ़ाई का काम जानती हैं। तो हम उन्हें सिलाई मशीनें ख़रीद कर दे देते हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि बाज़ अकेली माएं भी बच्चों के साथ आई हैं, जिन्होंने या तो अपने खाविंदों को छोड़ दिया है या बाज़ों के खाविंद उनके साथ नहीं आ सके और बाज़ के खाविंदों की वफ़ात भी हो चुकी है। इनके लिए क्या कोशिश कर रहे हैं?

इस पर सेक्रेटरी सनअत व तिजारत ने अर्ज़ की कि ऐसी तीन फैमिलियां मेरी जमाअत में भी हैं। हम उनके साथ राबता में हैं। जिन फैमिलियों में कोई मर्द नहीं है, उनके लिए हमारी पूरी कोशिश होती है कि कोई ऐसी जॉब तलाश की जाए जो उनके लिए मुनासिब हो। अगर उन्हें सिलाई-कढ़ाई आती हो तो शोबा सनअत व तिजारत उनके लिए सिलाई मशीनें भी ख़रीद कर मुहैया कर देता है।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तालीम को हिदायत देते हुए फ़रमाया:

आपको रिफ्यूजीज़ के बच्चों की भी मदद करनी चाहिए कि वो तालीम हासिल करें। जिनकी उम्रें ज़्यादा हो चुकी हैं और स्कूल में दाख़िला नहीं ले सकते, उनकी रहनुमाई होनी चाहिए कि वो कौन सा डिप्लोमा कर सकते हैं या कोई professional skill सीख सकते हैं। आप शोबा उमूर-ए-आमा से ऐसे लोगों का डेटा हासिल कर लें और उनकी रहनुमाई करें। अगर वो प्लंबिंग, मकैनिक या इस क़िस्म की दूसरी skills सीख लें तो उनके लिए काम के ज़्यादा अच्छे मौक़े होंगे, वर्ना वो Uber पर टैक्सी चलानी शुरू कर देते हैं। पता नहीं कब तक Uber चलती है। उन पर केस इत्यादि चलते रहते हैं। पता नहीं कितनी देर ये कंपनी मज़ीद रहती है। इसलिए Uber के इलावा और भी चीज़ें होनी चाहिएं। सेक्रेटरी सनअत व तिजारत को भी इस हवाले से देखना चाहिए।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी उमूर-ए-आमा को हिदायत देते हुए फ़रमाया: औरतों की तरफ़ से शिकायतों में इज़ाफ़ा होता जा रहा है कि जिन जमाअती शोबा जात में मर्द काम करते हैं, वो मर्दों के हक़ में होते हैं और औरतों के हक़ूक़ को नहीं देखा जाता। ऐसी शिकायतें भी दूर करें।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी ज़ियाफ़त ने अर्ज़ की कि जुमा के रोज़ शोबा ज़ियाफ़त ने आठ हज़ार मेहमानों के लिए खाना तैयार किया था और लोगों ने खाना पसंद भी किया है। खाना पूरा हो गया था, लेकिन बारिश की वजह से मार्किट में काफ़ी कीचड़ हो गया था, जिस की वजह से मुश्किल का सामना करना पड़ा, लेकिन इस हवाले से अलहमदुलिल्लाह मेहमानों की तरफ़ से किसी क़िस्म की कोई शिकायत नहीं मिली।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी माल से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि जो लोग चंदा अदा करते हैं, उस हिसाब से आमदनी per capita क्या बनती है?

इस पर सेक्रेटरी माल ने अर्ज़ की कि जो लोग वसीयत का चंदा अदा कर रहे हैं, उस हिसाब से आमदनी 47000 डॉलर सालाना बनती है। और जो लोग चंदा आम अदा करते हैं, उनकी इनकम 1518 डॉलर माहाना बन रही है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी माल ने बताया कि अमरीका में वैसे औसत तनख़्वाह हर स्टेट के लिहाज़ से अलहदा-अलहदा है। लेकिन बाल-उमूम 32 से 60 हज़ार डॉलर सालाना तनख़्वाह होती है। वैसे एक आम मज़दूर के लिए 15 डॉलर फी घंटा है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर 15 डॉलर फी घंटा उजरत है तो फिर एक हफ़्ते में चालीस घंटे के हिसाब से सालाना तनख़्वाह तक़रीबन 30 हज़ार डॉलर बनती है, लेकिन आपकी ग़ैर मूसियाँ की इनकम 15 से 18 हज़ार डॉलर सालाना है, जो कि असल आमद से आधी है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बाज़ टैक्सी ड्राइवर अपनी असल आमद के मुताबिक चंदा अदा करते हैं। आप उनके चंदों से हिसाब लगा सकते हैं कि उनकी हफ़्ता वार या माहाना आमद क्या है। इस की बुनियाद पर आप दूसरों को कह सकते हैं कि आप अपनी इनकम को बढ़ाएं। मुक़ामी जमाअतों के सेक्रेटरीयान-ए-माल को कहें कि वो इस पर काम करें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि आप लोग अपना बजट कैसे तैयार करते हैं? क्या मुक़ामी सेक्रेटरीयान माल घर-घर जाकर बजट लिखते हैं?

इस पर सेक्रेटरी माल ने अर्ज़ की कि हम सेक्रेटरीयान माल को यही कहते हैं कि वो हर मेंबर से राबता करके बजट लिखें, लेकिन वो हर मेंबर तक नहीं जाते। इसलिए जब हमें बजट मिलता है तो हम गुज़िश्ता साल के बजट के साथ मुवाजना कर लेते हैं।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ये दुरुस्त तरीक़ा नहीं है और न ही मालूमात दुरुस्त होती हैं। हर एक के साथ इंफ़रादी राबता होना चाहिए।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी वसाया से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि क्या आपने कमाने वाले मेंबरों की 50 फ़ीसद वसाया का टारगेट मुकम्मल कर लिया है?

इस पर सेक्रेटरी वसीयत ने अर्ज़ की कि अभी हम अपने टारगेट से पीछे ही हैं। अभी 28 फ़ीसद मुकम्मल हुआ है। इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर आप मूसियाँ की तादाद में इज़ाफ़ा कर लें तो आपकी असल आमद पर चंदा न देने की मुश्किल भी किसी हद तक दूर हो जाएगी।

सेक्रेटरी वसीयत ने अर्ज़ की कि हम इस पर काम कर रहे हैं। हज़ूर-ए-अनवर की ख़िदमत में दुआ की दरख़्वास्त है। बाज़ जमाअतों ने ये टारगेट हासिल कर लिया है, लेकिन बाज़ जमाअतें अभी पीछे हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्ति फ़सार फ़रमाया कि क्या आपके मुक़ामी सेक्रेटरीयान-ए-वसीयत फ़अल हैं? क्या आप उनके कोई रिफ्रेशर कोर्स इत्यादि करवाते हैं या उनसे पूछते हैं कि उन्हें किन मसाइल का सामना है?

इस पर सेक्रेटरी वसीयत ने अर्ज़ की कि सबसे बड़ी मुश्किल जो सामने आई है, वो यही है कि नौजवान कहते हैं कि अभी हमारा तक़वा का मेयार वो नहीं है, इसलिए हम वसीयत नहीं कर सकते।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ये तो सिर्फ़ बहाना है। इस हवाले से मैंने एक ख़ुत्बा भी दिया था। अगर आप वसीयत करें तो अल्लाह तआला आपको तक़वा का मेयार बढ़ाने की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमा देता है। ऐसे लोगों को ख़ुत्बात के सर्कुलर भिजवाया करें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जर्मनी बहुत बड़ी जमाअत है और उन्होंने ये टारगेट हासिल कर लिया है। इसी तरह यूके भी अपने

टारगेट के करीब पहुँच गई है।

* इसके बाद एडिशनल सेक्रेटरी माल ने अर्ज़ की कि मैं फाइनेंस टीम के साथ काम करता हूँ, जिसके 10 मेंबर हैं और हर मेंबर के सुपुर्द दस के करीब जमाअतें हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी माल से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया कि जो लोग अपनी असल आमद पर चंदा अदा नहीं करते, उनके लिए कोई प्लान बनाएं। अगर वो किसी वजह से असल आमद पर चंदा अदा नहीं कर सकते तो वो बाक़ायदा लिख कर छूट ले लें। इस हवाले से मुरब्बियान से भी मदद लें। बाज़ मुबल्लिग़ीन ने मुझे बताया है कि जब हम लोगों को या बाज़ अहदेदारान को चंदा की अदायगी के हवाले से कहते हैं तो उनका जवाब होता है कि आपके पास माली मुआमलात में दख़लंदाज़ी करने का इख़्तियार नहीं है। हालांकि ये तो माली मुआमलात में दख़लंदाज़ी नहीं है, वो तो सिर्फ़ चंदा की वसूली में मदद कर रहे होते हैं। सेक्रेटरी माल ने अर्ज़ की कि हमने बाज़ बुज़ुर्गान के ज़िम्मे बाज़ जमाअतें लगाई हैं, ताकि वो वहाँ जाकर लोगों से राबता करें और इस हवाले से काम करें।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: लेकिन इस बात की यक़ीन दहानी कर लिया करें कि जिन को जमाअतों में भिजवाना है, उनके अपने चंदा जात असल आमद के मुताबिक ही हैं।

* बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नेशनल सेक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया कि मुझे अमरीका से बाज़ लोगों के बाख़ूसूस औरतों के ख़त मिलते रहे हैं कि जब से हमने पैसे देकर अपने बच्चों की क्लासें बंद करवाई हैं, उस वक़्त से हमें मुश्किलात का सामना है। लेकिन अब तो रबवा में नज़ारत तालीम की तरफ़ से इन क्लासों का आग़ाज़ किया गया है। उनकी क्लासों में तालिब-ए-इल्मों का काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है और तुलबा की तादाद अब 2000 तक हो गई है।

सेक्रेटरी तालीमुल क़ुरआन ने अर्ज़ की कि रबवा वाली क्लास में भी 107 तुलबा रजिस्टर्ड हुए हैं, लेकिन हमने भी ऑनलाइन क्लासों का आग़ाज़ किया है, जिसमें 1240 तुलबा पढ़ रहे हैं। पढ़ाने के लिए 146 ख़वातीन असातिजा और 11 मर्द असातिजा हैं। ये सारे असातिजा रबवा से approve करवाए गए हैं।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद ने अर्ज़ की कि हमने गुज़िश्ता साल अपना तहरीक-ए-जदीद में शामिल होने वालों की तादाद और बजट दोनों का टारगेट मुकम्मल कर लिया है। गुज़िश्ता साल तहरीक-ए-जदीद में हिस्सा लेने वालों की तादाद 13 हज़ार थी, जबकि इस साल ये तादाद 14400 हो गई है। हमारी वसूली 2.22 मिलियन डॉलर थी।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: तक़रीबन 2 लाख डॉलर तो पाकिस्तान में सिर्फ़ लज्ना अमाउल्लाह रबवा ने अदा किया है।

* बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी वक़्फ़-ए-जदीद ने अर्ज़ की कि वक़्फ़-ए-जदीद में शामिल होने वालों की तादाद के लिहाज़ से गुज़िश्ता साल हमारा टारगेट 13000 का था, लेकिन 12 हज़ार 74 शामिलीन थे। टारगेट से थोड़ा पीछे रह गए थे। लेकिन इस साल इंशाअल्लाह हम 13 हज़ार का टारगेट हासिल कर लेंगे।

* बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर एडिशनल सेक्रेटरी तर्बियत नौ मुबईयीन ने अर्ज़ की कि गुज़िश्ता तीन सालों के नौ मुबईयीन की तादाद 385 है। सेक्रेटरी तर्बियत नौ मुबईयीन बराए-ए-यू के की तरफ़ से शाया किए गए सिलेबस हम इस्तेमाल कर रहे हैं, जिसमें नमाज़ सिखाना इत्यादि शामिल है।

* हज़ूर-ए-अनवर के इस्तिफ़सार पर एक आमिला के मेंबर ने अर्ज़ की कि गुज़िश्ता तीन सालों में नौ मुबईयीन की तादाद 385 है, लेकिन 210 को AIMS कार्ड इश्यू हुए हैं। इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इसका मतलब है कि 210 नौ मुबईयीन mainstream का हिस्सा बने हैं।

* हज़ूर-ए-अनवर के इस्तिफ़सार पर एडिशनल सेक्रेटरी तर्बियत नौ मुबईयीन ने अर्ज़ की कि नौ मुबईयीन का ताल्लुक़ मुख़्तलिफ़ अक़्वाम से है। अफ़्रीकन और अफ़्रीकन अमेरिकन की तादाद 83, अमेरिकन की तादाद 2, Caucasian की तादाद 55, एशियन 32, हिस्पैनिक 48, बांग्लादेशी 11 हैं। इसके इलावा चार Caribbean और पैसिफिक आईलैंड से 10, मिडिल ईस्ट से 4 और 67 पाकिस्तानी हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इरशाद फ़रमाया: इस बात की यक़ीन दहानी करें कि हर नौ मुबई को सूरा-ए-फातिहा और उसका तर्जुमा आता हो।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर नेशनल सेक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ ने अर्ज़ की कि वाक़िफ़ीन-ए-नौ की कुल तादाद 1385 है। इस में से 774 लड़के और 611 लड़कियाँ हैं। उम्र के लिहाज़ से 15 से 18 साल की उम्र वाले वाक़िफ़ीन 432 और 18 साल से ऊपर वाक़िफ़ीन में 345 हैं।

हज़ूर-ए-अनवर के इस्तिफ़सार पर सेक्रेटरी वक़्फ़-ए-नौ ने अर्ज़ की कि 327 वाक़िफ़ीन ने तजदीद-ए-वक़्फ़ किया है। इन में से 4 वाक़िफ़ीन जमाअत के मुख़्तलिफ़ शोबा जात में काम कर रहे हैं, जबकि 7 वाक़िफ़ीन बतौर मुबल्लिग़ ख़िदमात सरअंजाम दे रहे हैं।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सेक्रेटरी ज़राअत से इस्तिफ़सार फ़रमाया कि आपका ज़राअत के शोबा के साथ कोई ताल्लुक़ भी है?

इस पर सेक्रेटरी ज़राअत ने अर्ज़ की कि मैं कोलंबस जमाअत में तीन साल तक सेक्रेटरी ज़राअत रहा हूँ। इसके इलावा मेरा ज़राअत के पेशे के साथ कोई ख़ास ताल्लुक़ नहीं है। लेकिन मैंने बाज़ चीज़ों के हवाले से सोचा है कि वो की जा सकती हैं।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर आपके ज़हन में कोई प्लान है तो उसे लिख कर मुझे भिजवाएं। प्लान सीधा-सादा होना चाहिए।

* बाद में हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर मुहासिब ने रिपोर्ट पेश करते हुए कहा कि मैं सारी statements तैयार करके सेक्रेटरी माल को दे देता हूँ।

* इसके बाद हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर 'अमीन' ने अर्ज़ की कि मैं बैंक के साथ होने वाली transactions को देखता हूँ कि इख़राजात की रिपोर्ट्स के मुताबिक ही रक़्म निकलवाई जा रही है।

* बाद में हज़ूर-ए-अनवर के इस्तिफ़सार पर इंटरनल ऑडिटर ने बताया कि वो तीन महीने में एक मर्तबा ऑडिट करते हैं। इसमें इख़राजात और रसीदें इत्यादि चेक करते हैं।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि अगर कोई शोबा अपने मजव्वज़ा बजट से ज़्यादा ख़र्च करे तो उसके लिए क्या करते हैं?

इंटरनल ऑडिटर ने अर्ज़ की कि मैं फिर हालात के मुताबिक देखता हूँ कि अगर वाक़ई ज़रूरत के मुताबिक ख़र्च हुआ है तो ठीक है।

इस पर हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप ज़ाएद ख़र्च करने की इजाज़त नहीं दे सकते। अगर कोई शोबा अपनी limit से ज़्यादा ख़र्च करे तो आपको चाहिए कि अमीर साहिब को मुत्तला करें, ताकि वो ये मुआमला आमिला में रखें और फिर आमिला उस पर अपनी सिफ़ारिश करके मर्कज़ भेजे और फिर मर्कज़ से हत्मी मंज़ूरी आने के बाद ये इख़राजात हों। आपको चाहिए कि बहैसियत इंटरनल ऑडिटर इख़राजात की सख़्त जाँच-पड़ताल किया करें। अगर आप देखते हैं कि कोई चीज़ अपने मुक़र्ररा बजट से ज़्यादा ली गई है या कोई शोबा मुक़र्रर बजट से ज़्यादा ख़र्च कर रहा है तो आप उसे रोक दें। आपके पास ये इख़्तियार नहीं है कि आप किसी शोबा को उसके मुक़र्ररा बजट से ज़ाएद ख़र्च करने की इजाज़त दें।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इंटरनल ऑडिटर के फ़राइज़ बहुत वसीओ और अहम भी हैं। आपका फ़र्ज़ है कि आप सारे इख़राजात को देखें कि आया वो मंज़ूरशुदा बजट के मुताबिक हो रहे हैं। अगर मंज़ूरशुदा बजट के मुताबिक नहीं हो रहे तो फ़ौरन अमीर साहिब को इत्तिला करें।

* इसके बाद नाइब अमीर डॉक्टर हमीदुर्रहमान साहिब ने अर्ज़ की कि हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 2013 में लॉस एंजेल्स तशरीफ़ लाए थे और हज़ूर-ए-अनवर ने हिस्पैनिक लोगों में तबलीग करने की हिदायत फ़रमाई थी। चुनांचे इसके बाद हमने वहाँ काफ़ी काम किया है और 31 बैअतें हुई हैं। अब वहाँ हमने चर्च की बिल्डिंग भी ख़रीदी है, जिस के साथ 26 गाड़ियों के पार्क करने की भी जगह है। हज़ूर-ए-अनवर की खिदमत में इस प्रोजेक्ट में कामयाबी के लिए दुआ की दरख़्वास्त है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस्तिफ़सार पर मौसूफ़ ने अर्ज़ की कि 3800 मुरब्बा फुट मसक़्फ़ हिस्सा है। इस के दो हिस्से हैं, एक में पुराना चर्च है, जो कि 1800 मुरब्बा फुट का है, जबकि दूसरा हिस्सा नया बना है, जिस में स्कूल था। इस पर साढ़े नौ लाख डॉलर के इख़राजात आए हैं, जिस में से कुछ हमने मर्कज़ से बतौर क़र्ज़ लिए हैं और बाक़ी ख़ुद अदा किए हैं। इंशाअल्लाह मर्कज़ को भी उन की रक़्म जल्द वापस कर देंगे।

हज़ूर-ए-अनवर के इस्तिफ़सार पर नाइब अमीर साहिब ने अर्ज़ की कि इमारत की एक ही मंज़िल है, लेकिन हम दूसरी मंज़िल तामीर करने की इजाज़त के लिए कार्रवाई कर रहे हैं। इजाज़त मिलने की सूरत में नए हिस्से पर दूसरी मंज़िल तामीर की जा सकती है।

हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि आप structural engineers से पहले पूछ लें कि नीचे वाली मंज़िल upper floor का वज़न उठा लेगी।

नेशनल मजलिस-ए-आमिला की हज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ ये मीटिंग नौ बजे तक जारी रही। ......(शेष)

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

जमाअत अहमदिया का पुनर्जन्म के सिद्धांत के बारे में क्या दृष्टिकोण है?

क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद कोई शरीई नबी या यदि इस्लाम अंतिम धर्म है तो कोई गैर-शरीई नबी आ सकता है या आपका कोई ख़लीफ़ा आपकी पैरवी में नबी बन सकता है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त-43)

प्रश्न : एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में लिखा कि विभिन्न संस्कृतियों के लोगों, मुस्लिम विद्वानों, कुछ इस्लामी फिरकों और कई अन्य धर्मों ने पुनर्जन्म के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं, जिसका सारांश यह है कि अल्लाह तआला न्याय स्थापित करने के उद्देश्य से इंसान को दोबारा दुनिया में लाता है, ताकि वह विभिन्न अनुभवों जैसे गरीबी और अमीरी, बीमारी और स्वास्थ्य आदि से गुज़र सके। क्योंकि यह न्याय नहीं है कि इंसान की रूह सिर्फ एक ही अनुभव से गुज़रे। इस बारे में जमाअत अहमदिया का क्या दृष्टिकोण है और क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और किसी ख़लीफ़ा ने इस बारे में कुछ फ़रमाया है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मक्तूब तिथि 06 सितंबर 2021 ई. में इस सवाल के बारे में निम्नलिखित इरशादात फ़रमाए। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: पुनर्जन्म का सिद्धांत वास्तव में आख़िरत की ज़िंदगी, जो कि स्थायी ज़िंदगी है, को न समझने और न मानने, और साथ ही अल्लाह तआला की ज़ात, उसकी सिफ़ात ख़ास तौर पर सिफ़ात-ए-ख़ालिकियत, मालकियत और अल्लाह तआला की रहम से संबंधित विभिन्न आदतें जैसे उसका करम, अफ़व, दरगुज़र और रहम आदि से अनजान होने का नतीजा है। क्योंकि पुनर्जन्म के सिद्धांत की रू से अल्लाह तआला मजबूर है कि वह किसी इंसान को हमेशा के लिए नजात दे। वह इस बात पर क़ादिर नहीं कि यदि एक शख़्स अपनी आवारगी और बदचलनी के ज़माने से ताइब होकर अपने उसी पहले जन्म में नजात पाना चाहे तो उसे उसकी तौबा और पाक तब्दीली की वजह से नजात अता कर सके बल्कि उसके लिए पुनर्जन्म के उसूल की रू से किसी दूसरी योनि में पड़कर दोबारा दुनिया में आना ज़रूरी है, चाहे वह इंसानी योनि को छोड़कर कुत्ता बने या बंदर बने या सूअर बने। इसी तरह इस बातिल सिद्धांत की रू से किसी इंसान का पाकीज़गी की राहों पर चलना भी नामुमकिन है, क्योंकि इस सिद्धांत को मानने के नतीजे में क्या मालूम कि दोबारा होने वाले पुनर्जन्मी जन्म में जिस औरत से उसकी शादी हुई है, वह पहले जन्म में उसकी माँ या बहन या दादी हो। इसके अलावा इस सिद्धांत के और भी कई लागव और बेहूदा पहलू हैं।

सय्यदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुनर्जन्म के गैर-इस्लामी और अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात के बिल्कुल ख़िलाफ़ सिद्धांत के खंडन में अपनी कई तस्नीफ़ात (जिनमें इस्लामी उसूल की फ़लसफ़ी, चश्म-ए-मारिफत, आर्य धर्म, क़ादियान के आर्य और हम, शहन-ए-हक़, लेक्चर लाहौर, लेक्चर सियालकोट आदि शामिल हैं) में बहुत तफ़्सील के साथ दलीली बहस फ़रमाई है। हज़ूर अलैहिस्सलाम की इन तस्नीफ़ात में से इस्लामी उसूल की फ़लसफ़ी, चश्म-ए-मारिफत, क़ादियान के आर्य और हम, लेक्चर लाहौर और लेक्चर सियालकोट का अरबी भाषा में तर्जुमा हो चुका है और ये किताबें अरबी तर्जुमे के साथ ऑनलाइन भी मौजूद हैं, वहाँ से आप पुनर्जन्म के सिद्धांत का खंडन बयान फ़रमूदा सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पढ़ सकती हैं। बतौर नमूना हज़ूर अलैहिस्सलाम का एक इरशाद निम्नलिखित है। हज़ूर फ़रमाते हैं: ''दूसरा पहलू जो आर्य मत मख़लूक के संबंध में पेश करता है। उनमें से एक तो पुनर्जन्म है। अर्थात बार-बार रूहों का तरह-तरह की योनियों में पड़कर दुनिया में आना। इस सिद्धांत में सबसे पहले यह अम्र अजीब और हैरत अंगेज़ है कि दावा-ए-अक़्ल के बावजूद यह ख़्याल किया गया है कि परमेशर इस क़दर सख़्त दिल है कि एक गुनाह के एवज़ में करोड़ों साल तक बल्कि करोड़ों अरबों तक सज़ा दिए जाते हैं, हालाँकि जानता है कि उसके पैदा किए हुए नहीं हैं और उन पर उसका कोई भी हक़ नहीं है, बजाय इसके कि बार-बार योनियों के चक्कर में डालकर दुख में डाले। फिर क्यों इंसानी सरकार की तरह सिर्फ़ चंद साल की सज़ा नहीं देता? ज़ाहिर है कि लंबी सज़ा के लिए यह शर्त है कि सज़ा याफ़्तों पर कोई लंबा हक़ भी हो मगर जिस हालत में सभी ज़र्रे और रूहें ख़ुद-ब-ख़ुद हैं, कुछ भी उसका उन पर एहसान नहीं, बजाय इसके कि सज़ा की ग़रज़ से तरह-तरह की योनियों में उनको डाले। फिर वह किस हक़ पर लंबी सज़ा देता है। देखो इस्लाम में बावजूद इसके कि ख़ुदा फ़रमाता है कि हर एक ज़र्रा और हर एक रूह का मैं ही ख़ालिक हूँ और सभी क़ुव्वतें उनकी मेरे ही फ़ैज़ से हैं और मेरे ही हाथ से पैदा हुई हैं और मेरे ही सहारे से जीते हैं। फिर भी वह क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाता है: اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيۡدُ (हूद: 108) अर्थात दोज़ख़ी दोज़ख़ में हमेशा रहेंगे लेकिन न वह हमेशगी जो ख़ुदा को है बल्कि दूर दराज़ मुद्दत के लिहाज़ से। फिर ख़ुदा की रहमत दस्तगीर होगी, क्योंकि वह क़ादिर है जो चाहता है करता है। और इस आयत की तसरीह में हमारे सैय्यद व मौला नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक हदीस भी है। और वह यह है: يأتى على جهنّم زمانٌ ليس فيها احدٌ ونسيم الصبا تحرك ابوابها। अर्थात जहन्नम पर एक वह ज़माना आएगा कि उसमें कोई भी नहीं होगा। और नसीम-ए-सबा उसके दरवाज़ों को हिलाएगी। लेकिन अफ़सोस कि यह क़ौमें अल्लाह तआला को एक ऐसा चिड़चिड़ा और कीनह वर करार देती हैं कि कभी भी उसका गुस्सा फ़रो नहीं होता और बेशुमार अरबों तक योनियों में डालकर फिर भी गुनाह माफ़ नहीं करता ... दूसरा पहलू पुनर्जन्म के बातिल होने का यह है कि वह हक़ीक़ी पाकीज़गी के ख़िलाफ़ है। क्योंकि जब हम हर रोज़ देखते हैं कि किसी की माँ फ़ौत हो जाती है और किसी की बहन और किसी की पोती। तो फिर इस पर क्या दलील है कि इस सिद्धांत के क़ाइल इस गलती में मुबतला न हो जाएँ कि ऐसी जगह निकाह कर लें जहाँ निकाह करना वेद की रू से हराम है। हाँ, यदि हर एक बच्चे के साथ उसके पैदा होने के वक़्त में एक लिखी हुई फ़हरिस्त भी हमराह हो जिस में बयान किया गया हो कि वह पहली योनि में फ़लाँ शख़्स का बच्चा था तो इस सूरत में नाजाइज़ निकाह से बच सकते थे। मगर परमेशर ने ऐसा न किया। गोया नाजाइज़ तरीक़े को ख़ुद फैलाना चाहा। फिर मासिवा इसके हमें समझ नहीं आता कि इस क़दर योनियों के चक्कर में डालने से फ़ायदा क्या है। और जब कि सभी मदार नजात और मुक्ति का ज्ञान अर्थात मारिफत-ए-इलाही पर है तो यों चाहिए था कि हर एक बच्चा जो दोबारा जन्म लेता, पहला ज़ख़ीरा उसके ज्ञान और मारिफत का ज़ाए न होता। लेकिन ज़ाहिर है कि हर एक बच्चा जो पैदा होता है, ख़ाली का ख़ाली दुनिया में आ जाता है और एक आवारा और फ़ज़ूल ख़र्च इंसान की तरह सभी पहला अंदोख़्ता बर्बाद करके मुफ़लिस नादार की तरह मुँह दिखाता है और गो हज़ार मर्तबा उसने वेद मुक़द्दस को पढ़ा हो, एक वरक़ भी वेद का याद नहीं रहता। पस इस सूरत में योनियों के चक्कर की रू से नजात की कोई सूरत नज़र नहीं आती, क्योंकि ज़ख़ीरा ज्ञान और इल्म का जो हज़ार मुसीबत से हर एक योनि से जमा किया जाता है, वह साथ-साथ बर्बाद होता रहता है, न कभी महफ़ूज़ रहेगा और न नजात होगी। अव्वल तो हुज़ूरात आर्य के उसूलों की रू से नजात ही एक महदूद मीयाद थी। फिर उस पर यह मुसीबत कि सरमाया-ए-नजात का अर्थात ज्ञान जमा होने नहीं पाता। यह बदक़िस्मती रूहों की नहीं तो और क्या?'' (लेक्चर लाहौर, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 20, पृष्ठ 170 से 172)

प्रश्न : एक दोस्त ने क़ुरआन-ए-करीम की आयत

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيۡنَ خَلَوۡا مِنۡ قَبۡلُ وَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبۡدِيۡلًا ۔(سورۃ الاحزاب:63)

और आयत

فَهَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا سُنَّتَ الۡاَوَّلِيۡنَ فَلَنۡ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبۡدِيۡلًا وَلَنۡ تَجِدَ

لِسُنَّتِ اللّٰہِ تَحْوِیْلًا(सूरत फ़ातिर: 44) से इस्तिदलाल करते हुए हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की ख़िदमत-ए-अक़्दस में लिखा कि अल्लाह तआला के कुछ क़ानून क़तई और मुस्तकिल हैं, जिनमें उसका मुस्तकिल नबी या ताबे नबी भेजने का क़ानून भी शामिल है। तो क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बे'अत के 622 साल के बाद हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरह कोई शरीई नबी और यदि इस्लाम ख़ातमुल अदयान है तो क्या कोई ग़ैर-शरीई नबी आ सकता है या आपका कोई ख़लीफ़ा आपकी पैरवी में नबी बन सकता है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने मक्तूब तिथि 09 सितंबर 2021 ई. में इस सवाल के बारे में निम्नलिखित हिदायात से नवाज़ा। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: पहली बात तो यह है कि आपने क़ुरआन-ए-करीम की जिन आयतों से अल्लाह तआला के किसी मुस्तकिल या ताबे नबी के भेजने की सुनत के क़तई और दाइमी होने का इस्तिदलाल किया है, वह उन आयतों से नहीं होता, क्योंकि सूरत अल-अहज़ाब की आयतों में अल्लाह तआला मुसलमानों के मुक़ाबले पर मुख़ालिफ़ीन-ए-इस्लाम, ख़ास तौर पर मुनाफ़िक़ीन की नाकामी और तबाही के मज़मून को बयान करके फ़रमाता है कि यह अल्लाह तआला की सुनत है जो पहली इलाही जमाअतों के हक़ में भी जारी हुई और अब भी जारी होगी कि मुख़ालिफ़ीन व मुनाफ़िक़ीन-ए-इस्लाम ज़लील व रसवा होंगे और अहल-ए--इस्लाम को कामयाबी अता होगी। और सूरत फ़ातिर की आयतों में यह मज़मून बयान हुआ है कि अंबिया की बे'अत से पहले लोग बड़े-बड़े दावे करते हैं कि यदि उनके पास ख़ुदा की तरफ़ से कोई डराने वाला आया तो वह ज़रूर पहले लोगों से ज़्यादा हिदायत पाने वाले होंगे। लेकिन जब अल्लाह तआला अपने किसी फ़रिस्तादा को उनके पास भेजता है तो वह उसके ख़िलाफ़ कमर बस्ता हो जाते, तकब्बुर के साथ उसे ठुकराते और उसके ख़िलाफ़ हर तरह की साज़िशें करते हैं। ऐसी सूरत में फिर अल्लाह तआला भी उन मुख़ालिफ़ीन के ख़िलाफ़ अपनी पहली सुनत को जारी करता है और उन्हें तरह-तरह के अज़ाब में मुबतला करके नाकाम व नामुराद कर देता है और अपने फ़रिस्तादों को फ़तह व नस्रत से सरफ़राज़ फ़रमाता है।

पस इन आयतों से आप जो इस्तिदलाल कर रहे हैं, वह दुरुस्त नहीं है। लेकिन इसके साथ हमारा ईमान है कि दुनिया की हिदायत और इस्लाह के लिए जब भी किसी नबी या मुसल्लह की ज़रूरत होती है तो अल्लाह तआला इंसानियत पर रहम करते हुए किसी न किसी नबी या मुसल्लह को ज़रूर दुनिया की हिदायत के लिए मब'उस करता चला आया है और उसका यह रहम आइंदा भी जारी रहेगा, लेकिन उसके इस रहम का इज़्हार किस तरह होगा? यह वही बेहतर जानता है। जहाँ तक क़ुरआन-ए-करीम और अहादीस नबविया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस बारे में रहनुमाई के हुसूल का तअल्लुक़ है तो हमारे आक़ा व मौला हज़रत अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने बाद अपनी उम्मत में दो दफ़ा ख़िलाफ़त अला मिन्हाजिन नुबुव्वत के क़याम की बशारत दी है। पहली मर्तबा के क़याम के बाद आपने इस नेमत के उठाए जाने का ज़िक्र फ़रमाया है लेकिन दूसरी मर्तबा इस नेमत के क़याम की ख़ुशख़बरी देने के बाद आपने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई, जिससे इस नेमत के क़यामत तक जारी रहने का इस्तिदलाल होता है।

(मसनद अहमद बिन हंबल भाग 6 पृष्ठ 285, मसनद अन-नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु)

फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ और उस ज़माने के हक्म व अदल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से ख़बर पाकर क़ुरआन-ए-करीम की मुख़्तलिफ़ आयतें, अहादीस नबविया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और दूसरे मज़ाहिब की तारीख़ से इस्तिदलाल करते हुए फ़रमाया है कि इंसानी नस्ल की उम्र सात हज़ार साल है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बे'अत पाँचवें हज़ार साल में हुई और अब हम इस सिलसिले के सातवें हज़ार साल में से गुज़र रहे हैं। चुनाँचे हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: ''हमारा अक़ीदा जो क़ुरआन शरीफ़ ने हमें सिखलाया है, यह है कि ख़ुदा हमेशा से ख़ालिक है, यदि चाहे तो करोड़ों मर्तबा ज़मीन व आसमान को फना करके फिर वैसे ही बना दे और उसने हमें ख़बर दी है कि वह आदम जो पहली उम्मतों के बाद आया, जो हम सब का बाप था, उसके दुनिया में आने के वक़्त से यह सिलसिला-ए-इंसानी शुरू हुआ है। और इस सिलसिले की उम्र का पूरा दौर सात हज़ार बरस तक है। यह सात हज़ार ख़ुदा के नज़दीक ऐसे हैं जैसे इंसानों के सात दिन। याद रहे कि क़ानून-ए-इलाही ने निर्धारित किया है कि हर एक उम्मत के लिए सात हज़ार बरस का दौर होता है। इसी दौर की तरफ़ इशारा करने के लिए इंसानों में सात दिन निर्धारित किए गए हैं। ग़रज़ बनी आदम की उम्र का दौर सात हज़ार बरस निर्धारित है। और इस में से हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अहद में पाँच हज़ार बरस के क़रीब गुज़र चुका था। या ब-तबदीलुल अलफ़ाज़ यों कहो कि ख़ुदा के दिनों में से पाँच दिन के क़रीब गुज़र चुके थे, जैसा कि सूरत वल-अस्र में अर्थात उसके हुरूफ़ में अबजद के लिहाज़ से क़ुरआन शरीफ़ में इशारा फ़रमा दिया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वक़्त में जब वह सूरत नाज़िल हुई, तब आदम के ज़माने पर उसी क़दर मुद्दत गुज़र चुकी थी, जो सूरः मौसूफ़ा के अदाद से ज़ाहिर है। इस हिसाब से इंसानी नौ' की उम्र में से अब इस ज़माने में छह हज़ार बरस गुज़र चुके हैं और एक हज़ार बरस बाक़ी हैं। क़ुरआन शरीफ़ में बल्कि अक्सर पहली किताबों में भी यह नविश्ता मौजूद है कि वह आख़िरी मुरसल जो आदम की सूरत पर आएगा और मसीह के नाम से पुकारा जाएगा, ज़रूर है कि वह छठे हज़ार के आख़िर में पैदा हो, जैसा कि आदम छठे दिन के आख़िर में पैदा हुआ। यह सभी निशान ऐसे हैं कि तदब्बुर करने वाले के लिए काफ़ी हैं। और इन सात हज़ार बरस की क़ुरआन शरीफ़ और दूसरी ख़ुदा की किताबों के रू से तक्सीम यह है कि पहला हज़ार नेकी और हिदायत के फैलने का ज़माना है और दूसरा हज़ार शैतान के तसल्लुत का ज़माना है और फिर तीसरा हज़ार नेकी और हिदायत के फैलने का और चौथा हज़ार शैतान के तसल्लुत का और फिर पाँचवाँ हज़ार नेकी और हिदायत के फैलने का (यही वह हज़ार है जिस में हमारे सैय्यद व मौला ख़ातमुन्नबियीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुनिया की इस्लाह के लिए मब'उस हुए और शैतान क़ैद किया गया है) और फिर छठा हज़ार शैतान के खुलने और मुसल्लत होने का ज़माना है जो क़ुरून-ए-सलासा के बाद शुरू होता और चौदहवीं सदी के सर पर ख़त्म हो जाता है। और फिर सातवाँ हज़ार ख़ुदा और उसके मसीह का और हर एक ख़ैर व बरकत और ईमान और सलाह और तक़्वा और तौहीद और ख़ुदा परस्ती और हर एक क़िस्म की नेकी और हिदायत का ज़माना है। अब हम सातवें हज़ार के सर पर हैं। इस के बाद किसी दूसरे मसीह को क़दम रखने की जगह नहीं, क्योंकि ज़माने सात ही हैं जो नेकी और बदी में तक्सीम किए गए हैं। इस तक्सीम को सभी अंबिया ने बयान किया है। किसी ने इजमाल के तौर पर और किसी ने मुफ़स्सल तौर पर और यह तफ़्सील क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद है, जिस से मसीह मौऊद की निस्बत क़ुरआन शरीफ़ में से साफ़ तौर पर पेशगोई निकलती है। और यह अजीब बात है कि सभी अंबिया अपनी किताबों में मसीह के ज़माने की किसी न किसी पराए में ख़बर देते हैं और निज़ दज्जाली फ़ितने को भी बयान करते हैं। और दुनिया में कोई पेशगोई इस क़ुव्वत और तवातुर की नहीं होगी, जैसा कि सभी नबियों ने आख़िरी मसीह के बारे में की है।''

(लेक्चर लाहौर, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 20, पृष्ठ 184 से 186)

एक और जगह आप फ़रमाते हैं: ''सभी नबियों की किताबों से और ऐसा ही क़ुरआन शरीफ़ से भी यह मालूम होता है कि ख़ुदा ने आदम से लेकर आख़िर तक दुनिया की उम्र सात हज़ार बरस रखी है और हिदायत और गुमराही के लिए हज़ार-हज़ार साल के दौर मुक़र्रर किए हैं। अर्थात एक वह दौर है जिस में हिदायत का ग़लबा होता है और दूसरा वह दौर है जिस में ज़लालत और गुमराही का ग़लबा होता है और जैसा कि मैंने बयान किया, अल्लाह तआला की किताबों में यह दोनों दौर हज़ार-हज़ार बरस पर तक्सीम किए गए हैं। ... फिर हज़ार पंजम का दौर आया जो हिदायत का दौर था। यह वह हज़ार है जिस में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मब'उस हुए और अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ पर तौहीद को दोबारा दुनिया में क़ायम किया। पस आपके मिन जानिबिल्लाह होने पर यही एक ज़बरदस्त दलील है कि आपका ज़ुहूर उस साल के अंदर हुआ जो रोज़-ए-अज़ल से हिदायत के लिए मुक़र्रर था और यह मैं अपनी तरफ़ से नहीं कहता, बल्कि अल्लाह तआला की सभी किताबों से यही निकलता है और इसी दलील से मेरा दावा मसीह मौऊद होने का भी साबित होता है। क्योंकि इस तक्सीम की रू से हज़ार शशुम ज़लालत का हज़ार है और वह हज़ार हिजरत की तीसरी सदी के बाद शुरू होता है और चौदहवीं सदी के सर तक ख़त्म होता है। इस शशुम हज़ार के लोगों का नाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़िज-ए-अवज रखा है और सातवाँ

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 25 September 2025 Issue No. 39

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

हज़ार हिदायत का है जिस में हम मौजूद हैं। चूँकि यह आख़िरी हज़ार है, इसलिए ज़रूर था कि इमाम आख़िरुज़्ज़मान इसके सर पर पैदा हो और इसके बाद कोई इमाम नहीं और न कोई मसीह। मगर वह जो इसके लिए बतौर ज़िल्ल के हो। क्योंकि इस हज़ार में अब दुनिया की उम्र का ख़ातमा है, जिस पर सभी नबियों ने शहादत दी है और यह इमाम जो अल्लाह तआला की तरफ़ से मसीह मौऊद कहलाता है, वह मुजद्दिद-ए-सदी भी है और मुजद्दिदुल अलफ़ आख़िर भी। इस बात में नसारा और यहूद को भी इख़्तिलाफ़ नहीं कि आदम से यह ज़माना सातवाँ हज़ार है। और ख़ुदा ने जो सूरः वल-अस्र के अदाद से तारीख़-ए-आदम मेरे पर ज़ाहिर की, उस से भी यह ज़माना जिस में हम हैं, सातवाँ हज़ार ही साबित होता है। और नबियों का इस पर इत्तिफ़ाक़ था कि मसीह मौऊद सातवें हज़ार के सर पर ज़ाहिर होगा और छठे हज़ार के आख़िर में पैदा होगा, क्योंकि वह सब से आख़िर है, जैसा कि आदम सब से अव्वल था।'' (लेक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ाइन भाग 20, पृष्ठ 207 से 208)

अतः यह इस सिलसिले का वह आख़िरी हज़ार साल है जिस में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पेशगोइयों के ऐन मुताबिक़ आपके रूहानी फ़रज़ंद और गुलाम-ए-सादिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ातमुल खुलफा के तौर पर मब'उस फ़रमाया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पेशगोइयों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशादात से यही मुस्तनबत होता है कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से चूँकि यह आख़िरी हज़ार साल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीए क़ायम होने वाली खिलाफ़त अहमदिया हक़्क़ा इस्लामिया का दौर है। इसलिए यदि किसी वक़्त दुनिया की इस्लाह के लिए किसी मुसल्लह की ज़रूरत पड़ी तो अल्लाह तआला हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही के मुत्तबिअन में से किसी ऐसे शख़्स को दुनिया की इस्लाह के लिए खड़ा करेगा जो वक़्त का ख़लीफ़ा होगा लेकिन ख़लीफ़ा से बढ़कर मुसल्लह का मक़ाम भी उसे अता होगा। जैसा कि अल्लाह तआला ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस मक़ाम पर फ़ाइज़ फ़रमाया था। चुनाँचे आप इस मौऊद खिलाफ़त के मक़ाम को बयान करते हुए फ़रमाते हैं: ''फिर सिर्फ़ खिलाफ़त का सवाल नहीं, बल्कि ऐसी खिलाफ़त का सवाल है जो मौऊद खिलाफ़त है। इलहाम और वही से क़ायम होने वाली खिलाफ़त का सवाल है। एक खिलाफ़त तो यह होती है कि अल्लाह तआला लोगों से ख़लीफ़ा मुंतख़िब कराता है और फिर उसे क़बूल कर लेता है मगर यह वैसी खिलाफ़त नहीं। अर्थात मैं इसलिए ख़लीफ़ा नहीं कि हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल की वफ़ात के दूसरे दिन जमाअत अहमदिया के लोगों ने जमा होकर मेरी खिलाफ़त पर इत्तिफ़ाक़ किया, बल्कि इसलिए भी ख़लीफ़ा हूँ कि ख़लीफ़ा अव्वल की खिलाफ़त से भी पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला के इलहाम से फ़रमाया था कि मैं ख़लीफ़ा हूँगा। पस मैं ख़लीफ़ा नहीं, बल्कि मौऊद ख़लीफ़ा हूँ। मैं मामूर नहीं, मगर मेरी आवाज़ ख़ुदा-तआला की आवाज़ है कि ख़ुदातआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीए इसकी ख़बर दी थी। गोया इस खिलाफ़त का मक़ाम मामूरियत और खिलाफ़त के दरमियान का मक़ाम है और यह मौक़ा ऐसा नहीं है कि जमाअत अहमदिया इसे राइगाँ जाने दे और फिर ख़ुदातआला के हुज़ूर सुर्ख़रू हो जाए। जिस तरह यह बात दुरुस्त है कि नबी रोज़-रोज़ नहीं आते, उसी तरह यह भी दुरुस्त है कि मौऊद खुलफा भी रोज़-रोज़ नहीं आते।''

(रिपोर्ट मजलिस मशवरत 1936 ई., ख़िताबात शूरा भाग दूजम, पृष्ठ 18)

★ ★ ★

130 वां जलसा सालाना क़ादियान
26, 27, और 28 दिसम्बर 2025 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 26, 27, 28 दिसंबर 2025 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन। (नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

अख़बार बदर ख़ुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फरमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुज़ुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में क़ुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें।

(प्रबंधन)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad